सिल्सिलए फ़ैज़ाने अ़-श-रए मुबश्शरह के सातवें सहाबी

Hazrate Sayyiduna Abdurrahman Bin Auf (Hindi)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़

MAKTABA TUL MADINAH

المدينة العلمية
(دعوت اسلامی)
शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह किताब (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

सिल्सिलए फ़ैज़ाने अ़-श-रए मुबश्शरह के सातवें सह़ाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

पेशकश : शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत
(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

सिने त़बाअ़त : स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 सि.हि.

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 22 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1433 हि. **ह़वाला :** 174

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصلوۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''**ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ''

(मत़्बूआ़ **मक-त-बतुल मदीना**) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

E-mail.ilmia@dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी)

उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"फ़ैज़ाने अ़-श-रए मुबश्शरह" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो म-दनी फूल :

....बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

....जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ ﴾11﴿ और जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगा ﴾12﴿ इस ह़दीसे पाक **تَھَادَوْا تَحَابُّوْا** एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث: ۱۷۳۱، ج۲، ص۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾13﴿ सीरते सह़ाबा पर अ़मल की कोशिश करूंगा ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ (नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

मौज़ूअ़	सफ़्हा	मौज़ूअ़	सफ़्हा
अल मदीनतुल इल्मिय्या	9	ख़ुश बख़्ती का पहला सबब	31
पहले इसे पढ़ लीजिये	11	ख़ुश बख़्ती का दूसरा सबब	32
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	13	रसूलुल्लाह की त़रफ़ से जन्नती	
ख़ुश नसीब ताजिर	14	होने की बिशारत	34
येह ख़ुश नसीब ताजिर कौन थे ?	19	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जन्नती	
बुरे नाम को बदल दिया जाए	20	होने की बिशारत	35
रोज़े क़ियामत नाम से पुकारा		आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रफ़ीक़े जन्नत	
जाएगा	20	कौन ?	36
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम	22	तमाम शु-रफ़ा के सरदार	37
''मुह़म्मद'' नाम रखने की		ख़िदमते सरकार व अहले बैते	38
फ़ज़ीलत पर तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	23	अत़्हार	
नामे मुह़म्मद रखने के आदाब		सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़क़्र	
के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल	23	इख़्तियारी था	39
ह़सब व नसब	25	फ़क़्र को इख़्तियार करने की ह़िक्मत	40
आप की वालिदा का तआ़रुफ़	25	अहले बैत के ह़क़ीक़ी ख़िदमत	
आप की पैदाइश	26	गार	41
औलाद व अज़्वाज	27	ज़मीनो आस्मान में अमीन	42
ह़ुल्यए मुबा-रका	28	ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वकील	42
ह़याते मुबा-रका की चन्द झल्कियां	29	उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا	
ख़ुश बख़्तियों के अस्बाब	29	की दुआ़	43

www.dawateislami.net

मौज़ूअ़	सफ़्हा	मौज़ूअ़	सफ़्हा
माल में ब-र-कत की दुआ़ और उस के स-मरात	44	**सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की म-दनी सोच	58
मालो दौलत का मालिक होना बुरा नहीं	46	बाल बच्चों की ज़रूरिय्यात पूरी करना वाजिब है	59
जन्नत में जाने वाले पहले ग़नी	47	माल वु-रसा के लिये छोड़ने	
ग़नी किसे कहते हैं ?	48	का हुक्म	60
ह़क़ीक़ी ग़नी कौन है ?	48	तक़्वा व फ़तवा में फ़र्क़	61
माल कमाने से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम	49	वु-रसा के लिये कितना माल छोड़ा जाए ?	63
आयिन्दा के लिये माल जम्अ़ कर के रखना	49	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ताजिरों में शुमार	63
आराइश के लिये माल कमाने का हुक्म	50	''तिजारत अम्बियाए किराम की सुन्नत है'' के बाइस हुरूफ़ की निस्बत से तिजारत के 22	
तकब्बुर और बड़ाई जताने के लिये माल कमाना	50	म-दनी फूल	64
माल ''ख़ैर'' है	51	आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी	70
हुसूले माल का मुख़्तसर रास्ता व ज़रीआ़	53	सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ की सख़ावत	71
सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ की खुद्दारी	53	सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और ख़ौफ़े ख़ुदा	73
माल जम्अ़ करने, न करने की सूरतें	55	अस्लाफ़ की सीरत को याद रखना	74

www.dawateislami.net

मौज़ूअ़	सफ़्हा	मौज़ूअ़	सफ़्हा
दुन्यवी लज़्ज़ात से कनारा कशी	75	लम्बाई	90
आंखें अश्कबार हो गईं	78	﴾6﴿..... शम्ले की मिक़्दार	90
खाओ पियो और जान बनाओ	78	सब्ज़ इ़मामे की क्या बात है	91
भूक बादशाह और शिकम सैरी गुलाम है	79	दस्तार बन्दी	92
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर	81	दूसरा ए'ज़ाज़	93
आंखें नहीं, दिल रो रहा है	83	तीसरा ए'ज़ाज़	95
आप के ए'ज़ाज़ात	85	**इल्मी मक़ाम व मर्तबा**	96
पहला ए'ज़ाज़	85	दौरे रिसालत के मुफ़्ती	96
''इ़मामा'' के पांच हुरूफ़ की निस्बत से इ़मामा शरीफ़ के फ़ज़ाइ़ल पर 5 अ़हादीसे मुबा-रका	87	शराब की ह़द जारी करने में इज्तिहाद	97
इ़मामा शरीफ़ बांधने का त़रीक़ा	87	ह़द किसे कहते हैं ?	98
﴾1﴿..... दाईं त़रफ़ से शुरूअ़ करना	87	ह़ुदूदे ह़रम में शिकार के मु-तअ़ल्लिक़ इज्तिहाद	99
﴾2﴿..... बीच सर पर इ़मामा न होना	88	ता'दादे रक्अ़ात में शक	99
﴾3﴿..... टोपी पर इ़मामा बांधना	89	उम्मत के मोह़सिन	101
﴾4﴿..... इ़मामा खड़े हो कर बांधना	90	﴾2﴿..... त़ाऊ़न ज़दा अ़लाक़ा	102
﴾5﴿..... इ़मामा शरीफ़ की		त़ाऊ़न क्या है ?	102
		त़ाऊ़न से मरने वाला शहीद है	103
		त़ाऊ़न से भागना मम्नूअ़ है	104
		﴾2﴿..... अबू जह्ल की हलाकत	105
		येह म-दनी मुन्ने कौन थे ?	107
		लटक्ता हुवा बाज़ू	108

www.dawateislami.net

मौज़ूअ़	सफ़्ह़ा	मौज़ूअ़	सफ़्ह़ा
﴾3﴿......सिलए रेह़मी करो,		ओ़ह्दए ख़िलाफ़त से बेज़ारी	116
क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ी से बचो	109	अगर येह ज़िम्मेदारी सोंप दी	
सिलए रेह़मी क्या है ?	109	गई हो तो......	117
﴾4﴿...... आ़लिम की फ़ज़ीलत	110	सह़ाबए किराम के नज़्दीक मक़ाम	118
दीनी फ़ह्मो फ़िरासत मअ़		दारे फ़ानी से दारे बक़ा की	
ह़िक्मतो दानाई	111	त़रफ़ कूच	119
ह़िक्मत व दानाई से भरपूर फ़ैसला	111	आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे पुर	
फ़ैसला करना निहायत दुश्वार		अन्वार	120
अम्र है	114	वक़्ते वफ़ात सह़ाबए किराम के	
फ़ैसला करना ह़स्सास		तअस्सुरात	120
ज़िम्मेदारी है	115	मआख़िज़ो मराजेअ़	123

❁......❁......❁

ख़ुल्क़े इस्लाम

इस्लाम में ह़या को बहुत **अहम्मिय्यत** दी गई है। चुनान्चे ह़दीस शरीफ़ में है : बेशक हर दीन का एक ख़ुल्क़ है और इस्लाम का ख़ुल्क़ ह़या है। (سُنَن ابن ماجہ ج ۴ ص ۴۶۰ حدیث ۴۱۸۱ دارُالمَعْرِفۃ بیروت) या'नी हर उम्मत की कोई न कोई ख़ास ख़स्लत होती है जो दीगर ख़स्लतों पर ग़ालिब होती है और इस्लाम की वोह ख़स्लत ह़या है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ[6] शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब (4) शो'बए इस्लाही कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 **हि.**

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

आ़लमे ज़ीस्त पर हर त़रफ़ मायूसी और मह़रूमी के अंधेरे छाए हुए थे, इन्सानियत अख़्लाक़ी पस्ती का शिकार थी कि आ़लम के नजात दिहन्दा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और उन तमाम ज़न्जीरों को काट डाला जिन में इन्सानियत बुरी त़रह़ जकड़ी हुई थी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैज़े तरबिय्यत के असर से इन्सानियत अख़्लाक़ी पस्तियों से निकल कर आस्मान की बुलन्दियों को छूने लगी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी रात दिन की कोशिश से जो नियाज़ मन्द तय्यार किये वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और इ़श्क़ में इतने सरशार और वारफ़्ता थे कि अपने आक़ा के इशारे पर अपना सब कुछ क़ुरबान कर देना सब से बड़ी सआ़दत समझते थे। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर हुक्म की ता'मील और पैरवी उन की फ़ित्रते सानिया बन चुकी थी और शम्ए़ रिसालत के उन परवानों ने अपनी बे मिसाल मह़ब्बत का सुबूत देते हुए जब बीबी आमिना के लाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपनी जानें निसार कीं तो रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी रिज़ा का मुज़्दए जां फ़िज़ा कुछ यूं सुनाया :

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ وَ رَضُوْا عَنْہُ ؕ (پ۲۸،المجادلۃ:۲۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ैज़े नुबुव्वत से तरबिय्यत पाने और रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का मुज़्दा ह़ासिल करने वाली उन हस्तियों

www.dawateislami.net

ने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त के लिये जो क़ुरबानियां दीं उन का ह़क़ीक़ी सिला तो यक़ीनन उन्हें आख़िरत में मिलेगा मगर कुछ हस्तियां ऐसी भी थीं जिन्हें दुन्या में ही जन्नत की नवीदे पुर बहार सुनाई गई। यूं तो मुख़्तलिफ़ अवक़ात में जन्नत की बिशारत पाने वाले सह़ाबए किराम कई हैं मगर दस ऐसे जलीलुल क़द्र और ख़ुश नसीब सह़ाबा हैं जिन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे न-बवी के मिम्बर शरीफ़ पर खड़े हो कर एक साथ नाम ले कर जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी सुनाई। उन ख़ुश नसीबों को "**अ़-श-रए मुबश्शरह**" के नाम से याद किया जाता है। उन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴾1﴿ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ﴾2﴿ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ﴾3﴿ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ﴾4﴿ ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा ﴾5﴿ ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** ﴾6﴿ ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़वाम ﴾7﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ﴾8﴿ ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास ﴾9﴿ ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद ﴾10﴿ ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان।[1]

आ़शिक़ाने रसूल को दरबारे नुबुव्वत के इन चमक्ते सितारों की सीरत से आगाह करने के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के तह़्त एक शो'बा बनाम "**फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत**" का क़ियाम अ़मल में आया। चुनान्चे पेशे नज़र किताब इसी सिल्सिले की एक कड़ी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ "दा'वते इस्लामी" की तमाम मजालिस ब शुमूल **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन 11वीं और रात12वीं तरक़्क़ी अ़त़ा फरमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

[1] ……سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۷۶۸، ج۲، ص۲۱۶

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में दाख़िल हुवा तो मैं ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मस्जिद से बाहर निकलते हुए देखा। मैं भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में मस्जिद से बाहर निकल कर आप के पीछे पीछे चलने लगा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी मौजू-दगी की परवाह न की, यहां तक कि आप एक बाग़ में दाख़िल हुए और क़िब्ला रू हो कर एक त़वील सज्दा फ़रमाया। मैं कुछ फ़ासिले पर आप के पीछे खड़ा था आप के त़वील सज्दे के सबब मुझे गुमान हुवा कि शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को ज़ाहिरी वफ़ात दे दी है। मैं चलता हुवा आप के क़रीब पहुंचा और अपने सर को झुका कर आप के रुख़े अन्वर की ज़ियारत करने लगा, उसी वक़्त सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे अक़्दस को सज्दे से उठाया और मुझे इस ह़ालत में देख कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ तुम्हें क्या हुवा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : (**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !) जब आप ने सज्दे को

www.dawateislami.net

बहुत त़वील फ़रमा दिया तो मुझे येह गुमान हुवा कि शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को वफ़ाते ज़ाहिरी दे दी है, इसी लिये मैं झुक कर आप के रुख़े अन्वर की ज़ियारत कर रहा था । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम ने मुझे बाग़ में दाख़िल होते देखा था उस वक़्त मैं ने **जिब्रीले अमीन** عَلَیْہِ السَّلَام से मुलाक़ात की उन्हों ने मुझे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह ख़ुश ख़बरी दी कि : ‘‘**आप का जो उम्मती आप पर सलाम भेजेगा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस पर सलाम भेजेगा और जो उम्मती आप पर दुरूद भेजेगा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस पर दुरूद भेजेगा ।**’’[1]

दुरूद उन पे भेजो, सलाम उन पे भेजो
येही मोमिनो से ख़ुदा चाहता है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुश नसीब ताजिर

मक्के का एक नौ जवान और मालदार ताजिर अपनी अमानत और तिजारती महारत की बिना पर काफ़ी शोहरत रखता था, वोह तिजारत की ग़रज़ से दूर दराज़ मुल्कों का सफ़र करता और ब ग़-रज़े तिजारत मुल्के यमन जाने का भी इत्तिफ़ाक़ होता। उस ताजिर के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ़ बड़ा ही ईमान अफ़रोज़ है। चुनान्चे उस के बयान का ख़ुलासा कुछ यूं है कि मेरा या मेरे वालिद का जब भी यमन जाना होता तो हम **अ़स्कलान बिन अ़वाकिन ह़िम्यरी** के पास ठहरते जो एक जहां दीदा और

[1]……مسند ابی یعلٰی الموصلی، الحدیث:۸۲۶،ج۱،ص۳۵۸

www.dawateislami.net

साहिबे फ़िरासत शख़्स था, मैं जब भी जाता वोह मक्कए मुकर्रमा, का'बए मुशर्रफ़ा और ज़मज़म शरीफ़ के बारे में पूछा करता और येह सुवाल भी हमेशा पूछता कि क्या तुम्हारे हां किसी ऐसे शख़्स का ज़ुहूर हुवा है जिस का चरचा बहुत ज़ियादा हो ? या किसी ने तुम्हारे दीन की मुख़ा-लफ़त तो नहीं की ? मगर हर बार मैं नफ़ी में जवाब देता और क़ुरैश के दीगर मुख़्तलिफ़ अशराफ़ का ज़िक्र करता यहां तक कि जब मैं **सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सत के साल **अ़स्कलान बिन अ़वाकिन हिम्यरी** के पास यमन पहुंचा तो वोह बहुत लाग़र व कमज़ोर हो चुका था और उस की क़ुव्वते समाअ़त व बीनाई भी मु-तअस्सिर हो चुकी थी, आंखों पर पट्टी बंधी होने के सबब उस ने मुझ से तआ़रुफ़ के लिये मेरा नसब नामा पूछा । मैं ने नसब बताना शुरूअ़ किया तो वोह फ़ौरन मुझे पहचान गया और कहने लगा : ऐ मुअ़ज़्ज़ज़ ज़ोहरी मेहमान ! बस येही काफ़ी है । फिर कहने लगा : क्या मैं तुम को एक ऐसी अ़जीबो ग़रीब और अच्छी ख़बर न दूं जो तुम्हारे लिये तिजारत से ज़ियादा नफ़्अ़ मन्द हो ? मेरे "हां" कहने पर वोह कुछ यूं गोया हुवा : "गुज़श्ता माह तुम्हारी क़ौम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक ऐसा नबी मब्ऊ़स फ़रमाया है जिसे उस ने मक़ामे मुस्त़फ़ा व मुर्तज़ा पर फ़ाइज़ किया है, उस पर किताब नाज़िल फ़रमाई जाएगी और उसे बहुत ज़ियादा इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा जाएगा, वोह बुत परस्ती से रोकेगा और इस्लाम

www.dawateislami.net

की दा'वत देगा, ह़क़ पर अ़मल करने का हुक्म देगा और ख़ुद भी ह़क़ का पैरू होगा, बात़िल से न सिर्फ़ रोकेगा बल्कि उसे जड़ समेत उखाड़ फेंकेगा।''

उस साह़िबे फ़िरासत **ह़िम्यरी** (य-मनी) बूढ़े की बातें मेरे दिल में घर कर गईं और मैं ने बड़ी बेताबी से उस नबी के क़बीले के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो उस ने बताया कि वोह बनी हाशिम से है और तुम उन के रिश्तेदार हो। मेरी ख़ैर ख़्वाही करते हुए उस ने मुझे नसीह़त की : ''अपने क़ियाम को मुख़्तसर कर के जल्द लौट जाओ और जा कर उन की तस्दीक़ के साथ साथ उन से तआ़वुन भी करो और येह अश्आ़र मेरी त़रफ़ से उन की बारगाह में पेश करना।''

चन्द अश्आ़र और उन का तरजमा पेशे ख़िदमत है :

اَشْهَدُ بِاللّٰهِ ذِی الْمَعَالِی ..... وَفَالِقِ اللَّیْلِ وَالصَّبَاحِ

तरजमा : उस रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जो बुलन्दियों वाला और रोज़ो शब को एक दूसरे से निकालने वाला है।

اِنَّکَ فِی السَّرْوِ مِنْ قُرَیْشٍ ..... یَا ابْنَ الْمُفَدِّی مِنَ الذِّبَاحِ

तरजमा : ऐ उस हस्ती के फ़रज़न्दे अरजुमन्द जिस की जान के बदले जानवरों को ज़ब्ह़ कर के फ़िदया दिया गया ! यक़ीनन आप का तअ़ल्लुक़ अ़-ज़-मतो शराफ़त में क़ुरैश से है।

اُرْسِلْتَ تَدْعُوْ اِلٰی یَقِیْنٍ ..... تُرْشِدُ لِلْحَقِّ وَالْفَلَاحِ

तरजमा : आप को भेजा गया है ताकि आप लोगों को मन्ज़िले

www.dawateislami.net

यक़ीन की त़रफ़ बुलाएं और उन्हें ह़क़ व फ़लाह़ की राह दिखाएं।

اَشْهَدُ بِاللّٰهِ رَبِّ مُوْسٰى ..... اِنَّكَ اُرْسِلْتَ بِالْبِطَاحِ

तरजमा : उस रब्बे जुल जलाल की क़सम ! जो सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का रब है बेशक आप वादिये बत़्हा में जल्वा अफ़्रोज़ हो चुके हैं।

فَكُنْ شَفِيْعِىْ اِلٰى مَلِيْكٍ ..... يَدْعُو الْبَرَايَا اِلَى الْفَلَاحِ

तरजमा : ऐ शफ़ीए़ दो जहां ! उस रब्बे काएनात की बारगाहे नाज़ में मेरी शफ़ाअ़त कीजिये जो लोगों को फ़लाह़ व कामरानी की त़रफ़ बुलाता है।

मैं ने येह अश्आ़र याद कर लिये, फिर अपने कारोबारी मुआ़-मलात को जल्द अज़ जल्द पूरा कर के वापस मक्कए मुकर्रमा लौट आया और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात कर के उन्हें सारे वाक़िए़ से आगाह किया तो उन्हों ने बताया कि येह मब्ऊ़स होने वाले नबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें सारी मख़्लूक़ का रसूल बना कर भेजा है। जाओ ! उन की बारगाह में ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल करो। चुनान्चे मैं बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िरी के लिये चल पड़ा, उस वक़्त सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ख़दी-जतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं ने दाख़िल होने की इजाज़त त़लब की, मुझ पर नज़र पड़ते ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुस्कुराते हुए इर्शाद फ़रमाया : "मैं एक

www.dawateislami.net

ख़ुश नसीब चेहरे को देख रहा हूं और उस के लिये मुझे ख़ैर ही की उम्मीद है ।'' फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''यहां आने से क़ब्ल तुम्हारे साथ क्या मुआ़-मला हुवा ऐ **अबू मुह़म्मद** ?'' मैं ने अ़र्ज़ की येह तो आप इर्शाद फ़रमाइये कि क्या मुआ़-मला है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारे पास मेरे लिये एक अमानत है'' या इर्शाद फ़रमाया : ''किसी ने तुम्हारे हाथ मेरे लिये एक पैग़ाम भेजा है, जल्दी से मुझे बताओ क्यूं कि वोह (पैग़ाम भेजने वाला) **ह़िम्यर** का रहने वाला और ख़वास मुअमिनीन से है ।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह प्यार भरा अन्दाज़ (और मो'जिज़ए ग़ैबदानी) देख कर मैं फ़ौरन मुसल्मान हो गया । फिर मैं ने अपने बूढ़े **ह़िम्यरी** मेज़बान के (वालिहाना जज़्बात की अ़क्कासी करने वाले) अ़क़ीदत से भरपूर अश्आ़र हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सुनाए । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कई लोग ऐसे हैं जो मुझ पर बिन देखे ईमान लाते हैं और मेरी रिसालत की तस्दीक़ भी करते हैं, येह तमाम लोग मेरे सच्चे भाई हैं ।''[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

जब ह़ुस्न था उन का जल्वा नुमा अन्वार का आ़लम क्या होगा
हर कोई फ़िदा बिन देखे दीदार का आ़लम क्या होगा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1]……تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم ۳۹۱۱ عبدالرّحمن بن عوف، ج ۳۵، ص ۲۵۰ تا ۲۵۲ ملتقطاً

www.dawateislami.net

येह ख़ुश नसीब ताजिर कौन थे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं कि येह ख़ुश नसीब ताजिर कौन थे ? इस्लाम क़बूल करने से पहले मक्के के येह ख़ुश नसीब ताजिर **अ़ब्दे अ़म्र** या **अ़ब्दुल का'बा** के नाम से जाने जाते थे मगर जब उन्हों ने मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दामने रह़मत थामा तो उन्हें न सिर्फ़ कुफ़्र के अंधेरों से निकाल कर नूरे ह़क़ की ज़िया बारियों से फ़ैज़याब फ़रमाया बल्कि एक नया नाम और नई पहचान अ़त़ा फ़रमाते हुए रह़मान عَزَّوَجَلَّ पर ईमान रखने वाला बन्दा बना दिया और आज हम सब उन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम से जानते हैं । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सिरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن से मरवी रिवायत में है कि इस्लाम लाने से क़ब्ल आप का नाम **अ़ब्दुल का'बा** था । नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद फ़रमाते हैं कि पहले मेरा नाम **अ़ब्दे अ़म्र** था मगर जब इस्लाम की दौलत नसीब हुई तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम तब्दील फ़रमा दिया ।[1]

दामने मुस्त़फ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया
जिस के हु़ज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

---

[1]……معرفۃ الصحابۃ، معرفۃ عبد الرحمن بن عوف، الحدیث:۴۵۵، ۴۵۶، ج۱، ص۱۳۰

www.dawateislami.net

बुरे नाम को बदल दिया जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि बुरे नाम को बदल देना चाहिये जैसा कि मज़्कूरा बाला रिवायत में ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम तब्दील फ़रमा दिया। नाम तब्दील करने से मु-तअ़ल्लिक़ मज़ीद तीन अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं :

(1)..... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बेटी का नाम **आ़सिया** था, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम तब्दील फ़रमा कर जमीला रख दिया।[1]

(2)..... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम पहले **बर्रह** था, सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (**बर्रह** से) बदल कर **जुवैरिया** रख दिया।[2]

(3) ..... **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुरे नाम को (अच्छे नाम से) बदल देते थे।[3]

रोज़े क़ियामत नाम से पुकारा जाएगा

वालिदैन को चाहिये कि बच्चे का अच्छा नाम रखें कि

---

[1] .....صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب إستحباب تغییر الإسم القبیح إلی حسن.....الخ، الحدیث: ۱۵/۲۱۳۹، ص ۱۱۸۱

[2] .....صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تغییر الاسم القبیح، الحدیث: ۲۱۴۰، ص ۱۱۸۲

[3] .....سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی تغییر الاسماء، الحدیث: ۲۸۴۸، ج ۴، ص ۳۸۲

www.dawateislami.net

येह उन की त़रफ़ से अपने बच्चे के लिये सब से पहला और ऐसा बुन्यादी तोह़फ़ा है जो उ़म्र भर उस की पहचान बना रहेगा यहां तक कि जब ह़श्र बपा होगा तो मालिके काएनात عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उसे उसी नाम से पुकारा जाएगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने बापों के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो।''[1]

इस ह़दीसे पाक में उन लोगों के लिये बहुत अहम म-दनी फूल है जो उ़मूमन शर-ई मसाइल से ना वाक़िफ़ होने की वज्ह से बच्चों के ऐसे नाम रख देते हैं जिन के कोई मआ़नी नहीं होते या फिर अच्छे मआ़नी नहीं होते, ऐसे नाम से बचा जाए बल्कि चाहिये कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अस्माए मुबा-रका, सह़ाबए किराम व ताबिई़ने उ़ज़्ज़ाम और औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुबारक नामों पर नाम रखे जाएं, इस का एक फ़ाएदा तो येह होगा कि बच्चों का अपने अस्लाफ़ से रूह़ानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम होगा और दूसरा उन नेक हस्तियों से मौसूम होने की ब-र-कत से उन की ज़िन्दगी पर म-दनी अ-सरात मुरत्तब होंगे, नीज़ कल बरोज़े क़ियामत उन्हें इन मुबारक नामों से पुकारा जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

[1] ..... سنن ابی داود، کتاب الادب باب فی تغییر الاسماء، الحدیث: ۴۹۴۸، ج۴، ص۳۷۴

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारे नामों में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा नाम **अ़ब्दुल्लाह** और **अ़ब्दुर्रहमान** हैं।''[1]

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 601 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मज़्कूरा बाला ह़दीस के तह़्त इर्शाद फ़रमाते हैं : ''ह़दीस में जो इन दोनों नामों को तमाम नामों में ख़ुदा तआ़ला के नज़्दीक प्यारा फ़रमाया गया इस का मत़्लब येह है कि जो शख़्स अपना नाम **अ़ब्द** के साथ रखना चाहता हो तो सब से बेहतर **अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रह़मान** हैं, वोह नाम न रखे जाएं जो जाहिलिय्यत में रखे जाते थे कि किसी का नाम **अ़ब्दुश्शम्स** और किसी का **अ़ब्दुल दार** होता।'' नीज़ इस से येह न समझना चाहिये कि येह दोनों नाम **मुह़म्मद व अह़मद** से भी अफ़्ज़ल हैं, क्यूं कि **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्मे पाक ''**मुह़म्मद व अह़मद**'' हैं और ज़ाहिर येही है कि येह दोनों नाम ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मुन्तख़ब फ़रमाए, अगर येह दोनों नाम ख़ुदा के नज़्दीक बहुत प्यारे न होते

[1] .....صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب بیان مایستحب من الاسماء، الحدیث ۲۱۳۲، ص ۱۱۷۸

www.dawateislami.net

तो अपने मह़बूब के लिये पसन्द न फ़रमाया होता ।[1]

''मुह़म्मद'' नाम रखने की फ़ज़ीलत पर तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा

(1)..... जिस के लड़का पैदा हुवा और वोह मेरी मह़ब्बत और मेरे नामे पाक से तबर्रुक के लिये उस का नाम ''**मुह़म्मद**'' रखे वोह और उस का लड़का दोनों बिहिश्त में जाएं ।[2]

(2)..... रोज़े क़ियामत दो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे हुक्म होगा इन्हें जन्नत में ले जाओ, अ़र्ज़ करेंगे : इलाही ! हम किस अ़मल पर जन्नत के क़ाबिल हुए हम ने तो कोई काम जन्नत का न किया । रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : जन्नत में जाओ मैं ने ह़ल्फ़ फ़रमाया है कि जिस का नाम **अह़मद** या **मुह़म्मद** हो दोज़ख में न जाएगा ।[3]

(3)..... रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से फ़रमाया : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस का नाम तुम्हारे नाम पर होगा उसे दोज़ख का अ़ज़ाब न दूंगा ।[4]

नामे मुह़म्मद रखने के आदाब के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत,

---

[1].....बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 601

[2].....کنزالعمال، کتاب النکاح، الباب السابع فی برالاولاد وحقوقھم، الحدیث: ۴۵۲۱۵، ج۸، الجزء السادس عشر، ص۱۷۵

[3].....فردوس الاخبار، الحدیث: ۸۵۱۵، ج۲، ص۵۰۳

[4].....کشف الخفاء، حرف الخاء، الحدیث: ۱۲۴۳، ج۱، ص۳۴۵

www.dawateislami.net

परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में नामे **मुह़म्मद** रखने के फ़ज़ाइल ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं कि बेहतर येह है कि सिर्फ़ **मुह़म्मद** या **अह़मद** नाम रखे उस के साथ जान वग़ैरा और कोई लफ़्ज़ न मिलाए कि फ़ज़ाइल तन्हा इन्हीं अस्माए मुबा-रका के वारिद हुए हैं ।[1] और एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं कि फ़क़ीर غَفَرَاللّٰہِ تَعَالٰی ने अपने सब बेटों भतीजों का अ़क़ीक़े में सिर्फ़ **मुह़म्मद** नाम रखा फिर नामे अक़्दस के ह़िफ़्ज़े आदाब और बाहम तमीज़ के लिये उ़र्फ़ जुदा मुक़र्रर किये ।[2]

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **''अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा 19 पर नामे **मुह़म्मद** रखने के फ़ज़ाइल ज़िक्र करने के बा'द आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : आज कल مَعَاذَاللّٰہ नाम बिगाड़ने की वबा आ़म है हांला कि ऐसा करना गुनाह है और **मुह़म्मद** नाम का बिगाड़ना तो बहुत ही सख़्त तक्लीफ़ देह है । लिहाज़ा अ़क़ीक़े में नाम **मुह़म्मद** या **अह़मद** रख लीजिये और पुकारने के लिये

[1].....फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 691

[2].....फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 689

www.dawateislami.net

म-सलन बिलाल रज़ा, हिलाल रज़ा, जमाल रज़ा, कमाल रज़ा, उ़बैद रज़ा, जुनैद रज़ा, उसैद रज़ा, ज़ैद रज़ा वग़ैरा रख लिया जाए। इसी त़रह़ बच्चियों के नाम भी सह़ाबिय्यात व वलिय्यात के नाम पर रखना मुनासिब है जैसा कि सकीना, ज़रीना, जमीला, फ़ात़िमा, ज़ैनब, मैमूना, मरयम वग़ैरा।[1]

ह़सब व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पूरा नाम **अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** बिन अ़ब्द औ़फ़ बिन अ़ब्द बिन ह़ारिस बिन ज़ोहरा बिन किलाब बिन मुर्रह क़ुरैशी ज़ोहरी और कुन्यत अबू मुह़म्मद है। क़ुरैश के ख़ानदाने बनू ज़ोहरा से तअ़ल्लुक़ रखते थे, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी इसी ख़ानदान से थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **नजीबुत्त-रफ़ैन** थे या'नी मां और बाप दोनों की त़रफ़ से शरीफ़ और ख़ुश बख़्त थे, बाप की जानिब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़ुश बख़्ती मिली कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिल्सिलए नसब छट्टी पुश्त में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से जा मिलता है।

आप की वालिदा का तआ़रुफ़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा का पूरा नाम शिफ़ा बिन्ते औ़फ़ बिन अ़ब्द बिन ह़ारिस बिन ज़ोहरा था, इन का तअ़ल्लुक़ भी ज़ोहरी ख़ानदान से था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हिजरत

[1].....अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब, स. 19

www.dawateislami.net

की सआ़दत ह़ासिल है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا निहायत ही मुत्तक़ी और परहेज़ गार ख़ातून थीं । सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में ही इन का इन्तिक़ाल हो गया था । चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इन्तिक़ाल के बा'द आप के लाडले बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मैं अपनी वालिदा की त़रफ़ से ग़ुलाम आज़ाद कर सकता हूं ? सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हां ! तो आप ने वालिदा की त़रफ़ से ग़ुलाम आज़ाद कर दिया ।[1]

अपनी निस्बत से मैं कुछ नहीं हूं इस करम की बदौलत बड़ा हूं
उन के टुकड़ों से ए'ज़ाज़ पा कर ताजदारों की सफ़ में खड़ा हूं

आप की पैदाइश

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़म्र में मोह़सिने काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तक़रीबन दस साल छोटे थे । इस लिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़मुल फ़ील के दस साल बा'द मक्का में पैदा हुए ।[2] जब कि बि इ़ज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

[1] ……الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، کتاب النساء، الرقم ۱۱۳۸۰ الشفاء بنت عوف، ج۸، ص۲۰۳

[2] ……الطبقات الکبری، ومن بنی زھرۃ بن کلاب بن مرۃ، ج۳، ص۹۲

www.dawateislami.net

वाक़िअ़ए फ़ील के साल दुन्या में तशरीफ़ लाए।

औलाद व अज़्वाज

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमो बेश 15 निकाह़ फ़रमाए, जिन से आप के 20 बेटे और 8 बेटियां हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अज़्वाज के नाम और उन से पैदा होने वाली औलाद की तफ़्सील कुछ यूं है :

नम्बर शुमार	अज़्वाज	बेटे	बेटियां	कुल ता'दाद
1	उम्मे कुल्सूम बिन्ते उ़त्बा बिन रबीआ़	सालिम अक्बर	.....	1
2	बिन्ते शैबा बिन रबीआ़	.....	उम्मे क़ासिम	1
3	उम्मे कुल्सूम बिन्ते उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़	मुह़म्मद, इब्राहीम, हुमैद, इस्माई़ल	ह़मीदा, उम्मतुर्रह़मान	6
4	सहला बिन्ते आ़सिम बिन अ़दी	मआ़न, उ़मर, ज़ैद	उम्मतुर्रह़मान सुग़रा	4
5	बह़रिय्या बिन्ते हानी बिन क़बीसा	उ़र्वह अक्बर	.....	1
6	सहला बिन्ते सुहैल बिन अ़म्र	सालिम असग़र	.....	1
7	उम्मे ह़कीम बिन्ते क़ारिज़ बिन ख़ालिद	अबू बक्र	.....	1
8	बिन्ते अबुल ह़ैस बिन राफ़ेअ़ बिन अम्र अल क़ैस	**अ़ब्दुल्लाह**	.....	1
9	तुमाज़र बिन्ते अस्बग़ बिन अ़म्र	अबू स-लमा (अ़ब्दुल्लाह असग़र)	.....	1
10	अस्मा बिन्ते सलामा बिन मुख़र्रबा	अ़ब्दुर्रह़मान	.....	1
11	उम्मे हुरैस	मुस्अ़ब	आमिना व मरयम	3

www.dawateislami.net

12	मज्द बिन्ते यज़ीद बिन सलामा	सुहैल (अबुल अब्यज़)	.....	1
13	ग़ज़ाल बिन्ते किस्रा	उ़स्मान	.....	1
14	ज़ैनब बिन्ते सबाह़ बिन सा'लबा	.....	उम्मे यह़या	1
15	बादिया बिन्ते ग़ीलान बिन स-लमा	.....	जुवैरिया	1
.....	.....	उ़र्वह, यह़या, बिलाल	.....	3
कुल ता'दाद	**अज़्वाज** =15	**बेटे** = 20	**बेटियां** = 8	28

मुह़म्मद वोही बेटे हैं जिन के नाम से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत **''अबू मुह़म्मद''** है। **ग़ज़ाल बिन्ते किस्रा** येह उम्मे वलद थी और यौमे मदाइन ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ैदियों में थी। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तीन बेटों उ़र्वह, यह़या और बिलाल की आगे औलाद न हुई और इन तीनों की माएं भी उम्मे वलद ही थीं।[1]

हुल्यए मुबा-रका

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जिस्मानी हुल्या कुछ यूं था : ''रंगत सुर्ख़ी माइल सफ़ेद, चेहरा चांद जैसा ह़सीन, गाल गुलाब की त़रह़ नर्म व मुलायम, आंखें कुशादा और लम्बी पल्कों वाली, नाक लम्बी और ख़ुशनुमा, हथेलियां और उंग्लियां मोटी मोटी थीं, नीज़ दाढ़ी शरीफ़ और सर के बाल आख़िर उ़म्र तक सियाह ही रहे।[2]

---

[1] .....الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر ازواج عبد الرحمن بن عوف وولدہ، ج ۳، ص ۹۴

[2] .....اسد الغابۃ، حضرت عبد الرّحمن بن عوف، ج ۳، ص ۵۰۰

www.dawateislami.net

ह़याते मुबा-रका की चन्द झल्कियां

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नऐम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 430 सि.हि.) **ह़िल्यतुल औलिया** में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ह़यात को कुछ यूं बयान करते हैं : ❁..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़राख़ दस्ती व मालदारी में सादा ज़िन्दगी बसर करते ❁..... अपना माल, मालो दौलत अ़त़ा करने वाले रब्बे मन्नान عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च कर देते ❁..... माल की वज्ह से आने वाली आज़्माइश व सरकशी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते ❁..... ख़ुशी हो या ग़मी हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से ही लौ लगाए रखते ❁..... दोस्त अह़बाब की जुदाई का ख़ौ़फ़ रखते ❁..... क़ल्बो निगाह के ज़रीए इ़ब्रत ह़ासिल करते रहते ❁..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास माल बहुत ज़ियादा था ग़रीबों, मिस्कीनों पर एह़सान फ़रमाते उन्हें ख़ुद अपने हाथों से अ़त़िय्यात देते ❁..... फ़क़ीरों और नादारों पर ख़र्च करने में मालदारों के लिये एक नमूने की ह़ैसियत रखते थे ।[1]

ख़ुश बख़्तियों के अस्बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश बख़्तियों और करम नवाज़ियों के किसी की त़रफ़ रुख़ करने के कई अस्बाब होते हैं,

---

[1] .....حلیۃ الاولیاء، الرقم ۹ عبد الرحمن بن عوف، ج ۱، ص ۱۴۱، ملتقطاً

www.dawateislami.net

उन में से एक अहम सबब बन्दे या उस के वालिदैन का कोई नेक अ़मल होता है। जैसा कि जब ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने दो यतीम बच्चों के घर की गिरती हुई दीवार को दुरुस्त फ़रमाया था उस का सबब न तो वोह बच्चे थे और न ही उन की बस्ती वाले बल्कि उन के अज्दाद में से एक शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नेक बन्दा था। चुनान्चे फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ
(پ۱۶، الکھف:۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन का बाप नेक आदमी था।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْہَادِی "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में उस नेक आदमी के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "उस का नाम **काशिह़** था और येह शख़्स परहेज़ गार था। ह़ज़रत मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحِمَہُ اللہ ने फ़रमाया **अल्लाह तआ़ला** बन्दे की नेकी से उस की औलाद को और उस की औलाद की औलाद को और उस के कुम्बे वालों को और उस के मह़ल्ला दारों को अपनी ह़िफ़ाज़त में रखता है।"

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 65 पर है कि उन यतीम बच्चों का वोह नेक बाप उन की मां का सातवां दादा था।[1]

[1]......जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि.1, स. 65

www.dawateislami.net

ख़ुश बख़्ती का पहला सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर ख़ुश बख़्तियों ने जो डेरे डाल रखे थे उस का एक सबब तो येह है कि येह पैदाइशी ख़ुश बख़्त और नेक ख़स्लत थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना **हुमैद** बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर बीमारी के सबब बेहोशी त़ारी हुई तो सब ने येह गुमान किया कि शायद आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए हैं। चुनान्चे, मेरी वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते उ़क़्बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا (जज़अ़ फ़ज़अ़ करने के बजाए) फ़ौरन मस्जिद की त़रफ़ बढ़ीं ताकि इस अन्दोह नाक सदमे पर सब्र में मदद चाहने के लिये रब्बे ज़ुल जलाल के इस फ़रमान पर अ़मल पैरा हों : ﴿**اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ**﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۵۳) "**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** नमाज़ और सब्र से मदद चाहो।" मगर कुछ ही देर में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को होश आया तो आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बड़ाई व बुज़ुर्गी बयान की या'नी **अल्लाहु अक्बर** कहा और सब घर वालों ने भी **अल्लाहु अक्बर** कहा। फिर आप हम से पूछने लगे : "क्या मुझ पर ग़शी त़ारी हो गई थी ?" हम ने अ़र्ज़ की : "जी हां" तो आप ने बताया कि मेरे पास दो फ़िरिश्ते आए

www.dawateislami.net

जिन में से एक निहायत ही सख़्त लहजे में बात करने वाला था, कहने लगे : ''चलें हमारे साथ ताकि हम आप का फ़ैसला **बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त** से मा'लूम करें कि आप खु़श बख़्त हैं या नहीं ?'' फिर दोनों मुझे ले कर चल दिये, रास्ते में एक तीसरा फ़िरिश्ता मिला और उस ने इन दोनों से पूछा : ''इन्हें कहां ले जा रहे हो ?'' उन्हों ने जवाब दिया : ''हम इन्हें **अल अ़ज़ीज़ुल अमीन** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह) में ले जा रहे हैं ।'' तो उस फ़िरिश्ते ने कहा : ''इन को वापस ले जाओ क्यूं कि येह तो उन लोगों में से हैं जिन के लिये मां के पेट में ही खु़श बख़्ती व मग़्फ़िरत लिख दी गई थी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब तक चाहेगा इन की औलाद को इन से नफ़्अ़ पहुंचाएगा ।'' इस वाक़िए के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक माह तक ज़िन्दा रहे, फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया ।[1]

खु़श बख़्ती का दूसरा सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की खु़श बख़्ती का दूसरा सबब येह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ऐसी बे मिसाल मां के लाल हैं जिस की खु़श बख़्ती पर दोनों जहां रश्क करते हैं क्यूं कि जब पैकरे हु़स्नो जमाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुफ़्रो शिर्क और वह़्शतो

[1] ......المصنف لعبد الرزاق، باب القدر، الحدیث: ٢٠٢٣٤، ج١٠، ص١٤٦

دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ماقیل لعبد الرحمن بن عوف فی غشیتہ، ج٧، ص٤٣

www.dawateislami.net

बर-बरिय्यत के घुप अंधेरों को दूर करने, आ़-लमीन के लिये रह़मत बन कर मादरे गीती पर जल्वा अफ़रोज़ हुए तो दुन्या में सब से पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल करने वाले और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर को छूने वाले हाथ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के थे। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे हाथों पर जल्वा अफ़रोज़ हुए।"[1]

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यि-दतुना शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की क़िस्मत पर क़ुरबान ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या में तशरीफ़ लाते ही जो ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल की थी ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन ने उस के तुफ़ैल बत़ौरे इन्आ़म इन्हें और इन की औलाद को जहन्नम की आग से बराअत का परवाना अ़त़ा फ़रमा दिया क्यूं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास मौजूद उस रुमाल पर दुन्या की आग ह़राम हो सकती है[2] जिसे सय्यिदे आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रूए अन्वर से मस होने का शरफ़ ह़ासिल था तो येह कैसे हो सकता है कि दुन्या में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आ-वरी के वक़्त जिन

---

[1]......الشفاء، فصل في ماظهر من الايات عند مولده، ج ۱، ۳٦۲

[2]......شواهد النبوة، رکن خامس، ص ۱۸۱

www.dawateislami.net

आंखों ने रुख़े ज़ैबा का दीदार किया हो और जिन हाथों ने सब से पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे नाज़ को छूने का शरफ़ पाया हो उन आंखों या हाथों पर जहन्नम की आग ह़राम न होती। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस पहली ख़ादिमा को औलाद समेत अपने दामने रह़मत में श-रफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाते हुए न सिर्फ़ इस्लाम की दौलत से नवाज़ा बल्कि हिजरत की सआ़दत भी अ़त़ा फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यि-दतुना शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस लख़्ते जिगर या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन दस ख़ुश नसीबों में शामिल फ़रमा दिया जिन्हें दुन्या ही में जन्नत की नवीद मिली। चुनान्चे,

रसूलुल्लाह की त़रफ़ से जन्नती होने की बिशारत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, अ़ली, त़ल्ह़ा, ज़ुबैर, **अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़**, सा'द बिन अबी वक़्क़ास, सई़द और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن जन्नती हैं।"[1]

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن अपने मश्हूरे ज़माना कलाम "**मुस्त़फ़ा जाने रह़मत**

[1] ……سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۷۶۸، ج۵، ص۴۱۶

www.dawateislami.net

पे लाखों सलाम'' में अ़-श-रए मुबश्शरह के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं :

वोह दसों जिन को जन्नत का मुज़्दा मिला

उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जन्नती होने की बिशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : शाम के ताजिरों का एक क़ाफ़िला ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये आया तो वोह उस पूरे क़ाफ़िले को सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले आए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जन्नती होने की दुआ़ दी, उसी वक़्त ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام नाज़िल हुए और यूं अ़र्ज़ की : ''(**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !) बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सलाम इर्शाद फ़रमाता है, और फ़रमात है : **''अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ को मेरा सलाम दो और इन्हें मेरी त़रफ़ से भी जन्नत की ख़ुश ख़बरी दो ।''**[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मां के पेट से ख़ुश बख़्त पैदा हुए थे जिस का अन्दाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बि'सते न-बवी से

---

[1]......الریاض النضرہ، ج ۲، ص ۳۰۵

www.dawateislami.net

क़ब्ल की ज़िन्दगी पर त़ाइराना नज़र डालने से भी बख़ूबी हो जाता है क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार गिनती के उन चन्द लोगों में होता है जिन्हों ने ज़मानए जाहिलिय्यत में भी उम्मुल ख़बाइस (बुराइयों की मां) या'नी शराब जैसी शै को कभी हाथ न लगाया ह़ालां कि उस वक़्त पूरा मुआ़-शरा इस बुराई में मुब्तला था और इसे मा'यूब भी न समझा जाता। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ शिहाबुद्दीन अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 852 सि.हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मानए जाहिलिय्यत में भी शराब को ह़राम जानते थे।[1]

तू नशे से बाज़ आ, मत पी शराब
दो जहां हो जाएंगे वरना ख़राब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रफ़ीक़े जन्नत कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ख़ुश ख़बरी न दूं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !" फ़रमाया : "तुम्हारे वालिद या'नी अबू बक्र जन्नती हैं और जन्नत में उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام होंगे, और उ़मर जन्नती हैं उन के

[1] .....الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۵۱۹۵ عبد الرحمن بن عوف، ج ۴، ص ۲۹۳

www.dawateislami.net

रफ़ीक़े जन्नत ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام होंगे, और उ़स्मान जन्नती हैं उन का रफ़ीक़ मैं ख़ुद, और अ़ली जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते यह़्या बिन ज़-करिय्या عَلَیْہِمَا السَّلَام होंगे, और त़ल्ह़ा जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام होंगे, और ज़ुबैर जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام होंगे, और सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं और उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلَیْہِمَا السَّلَام होंगे, और सई़द बिन ज़ैद जन्नती हैं और उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते मूसा बिन इ़मरान عَلَیْہِ السَّلَام होंगे, **और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ जन्नती हैं और उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते ई़सा बिन मरयम** عَلَیْہِ السَّلَام **होंगे,** और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ जन्नती हैं और उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام होंगे।" फिर फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! मैं मुर-सलीन का सरदार हूं, तुम्हारे वालिद अफ़्ज़लुस्सिद्दीक़ीन हैं और तुम उम्मुल मुअमिनीन हो।"[1]

तमाम शु-रफ़ा के सरदार

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुश बख़्ती और शराफ़त व अ़-ज़मत के क्या कहने कि ख़ुद सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें शु-रफ़ा का सरदार फ़रमाया। चुनान्चे,

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन

[1]......الریاض النضرہ، ج ۱، ص ۳۵

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْف سَيِّدٌ مِنْ سَادَاتِ الْمُسْلِمِيْنَ"** या'नी अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ मुसल्मान शु-रफ़ा के सरदार हैं।[1]

ख़िदमते सरकार व अहले बैते अ़त्हार

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत व निस्बत का येह तअ़ल्लुक़ हमेशा बढ़ता ही रहा और आप ने अपनी ज़िन्दगी में मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत बजा लाने का कोई भी मौक़अ़ हाथ से जाने न दिया चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दौलत ख़ाने पर तशरीफ़ फ़रमा हैं, नौ जवानाने जन्नत के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को भूक से बेताब देख कर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इर्शाद फ़रमाया : "हमारी ख़िदमत की सआ़दत कौन ह़ासिल करेगा ?" इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक त़श्त में सत्तू, पनीर और घी से तय्यार कर्दा ह़ल्वे के साथ दो तली हुई रोटियां ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप

[1]……الریاض النضرۃ، جلد ۲، ص ۳۰۶

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दुन्यावी मुआ़-मलात के लिये काफ़ी है और तुम्हारे उख़्रवी मुआ़-मलात का मैं ख़ुद ज़ामिन हूं।''[1]

मेरे प्यारे आक़ा की शान ही निराली है
दो जहां के दाता हैं और हाथ ख़ाली है

सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का फ़क़्र इख़्तियारी था

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे कि रह़मते आ़-लमिय्यान, मालिके दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़क़्र (या'नी ज़ाहिरी मालो अस्बाब का कम होना) इख़्तियारी था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़क़्र को दुन्यावी तवंगरी पर और आख़िरत को दुन्या पर ख़ुद ही तरजीह़ दी, वरना ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने आप को अशरफ़ तरीन मख़्लूक़ बनाया और मह़बूबिय्यते ख़ास का ख़िल्अ़ते फ़ाख़िरा अ़त़ा फ़रमाया, **अल्लाह अल्लाह !** मह़बूबिय्यत की वोह अदाएं कि रब عَزَّوَجَلَّ ख़ुद इर्शाद फ़रमाता है : ''**لَوْلَاکَ لَمَاخَلَقْتُ الدُّنْیَا**'' या'नी ऐ मह़बूब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं अगर तुम्हें पैदा न करता तो दुन्या ही को न बनाता।''[2] उ़लुव्वे मर्तबत (मरातिब की बुलन्दी) की कैफ़िय्यत कि अपने ख़ज़ानों की कुन्जियां दे कर मुख़्तारे कुल बना दिया, ऐसे बादशाह जिन के

[1]……کنز العمال، تتمة العشرة، باب جامع العشرة المبشرة، الحدیث: ۳۲۷۳۲، ج۷، الجزء ۱۳، ص۱۰۷ ملتقطاً

[2]……فردوس الاخبار، الحدیث: ۸۰۹۵، ج۲، ص۴۵۸

www.dawateislami.net

मुक़द्दस सर पर दोनों आ़लम की हुकूमत का चमक्ता ताज रखा गया, ऐसे रिफ़्अ़त पनाह, जिन के मुबारक पाउं के नीचे तख़्ते इलाही बिछाया गया, सलाती़ने आ़लम, दुन्या की ने'मतें बांटने वाले, आप के दर की भीक से अपनी झोलियां भरें, बल्कि मुंह मांगी मुरादें पूरी करें, ऐसे जलीलुल क़द्र बादशाह जिन की हुकूमत का डंका तमाम आस्मान व तमाम रूए ज़मीन में बज रहा है, उन के बरगुज़ीदा घर में आसाइश की कोई चीज़ नहीं, आराम के अस्बाब तो दर कनार, खुश्क खजूरें और जव के बे छने आटे की रोटी भी तमाम उ़म्र पेट भर कर न खाई ।

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम
मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं उन के ख़ाली हाथ में

फ़क़्र को इख़्तियार करने की ह़िक्मत

अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐ़शो इ़शरत में ज़िन्दगी बसर फ़रमाते और आसाइशो राह़त मह़बूब रखते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुशी पर खुश होने वाला दुन्या में जन्नतों को उतार कर रख देता । एक बार आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप को पयाम भेजा : ''कहो तो मक्के के दो पहाड़ों को सोने का बना दूं कि वोह तुम्हारे साथ रहें ।'' अ़र्ज़ की : ''येह चाहता

www.dawateislami.net

हूं कि एक दिन खा कर शुक्र बजा लाऊं, एक दिन भूका रह कर सब्र करूं।'' अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐशो इ़शरत में मश्ग़ूल रहते तो ''**तक्लीफ़ व मुसीबत**'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-रकात से महरूम रह जातीं।[1]

अहले बैत के ह़क़ीक़ी ख़िदमत गार

एक बार शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे बा'द जो मेरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) की चाकरी करेगा वोह ''**اَلصَّادِقُ وَالْبَارّ**'' (या'नी सच्चा और नेक) होगा।'' चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप का ह़क़ीक़ी ख़िदमत गार होने का ह़क़ अदा कर दिया कि जब भी उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को ह़ज के लिये या कहीं और जाना होता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक जां निसार और वफ़ा शिआ़र सिपाही की त़रह़ साथ साथ रहते, उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के आराम और पर्दे का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाते, इस त़रह़ कि दौराने सफ़र ऊंटों के कजावों पर सब्ज़ रंग की मोटी चादरें डाल देते और क़ियाम करना होता तो किसी ऐसी मह़फ़ूज़ घाटी का इन्तिख़ाब फ़रमाते जहां दाख़िल होने और निकलने का सिर्फ़ एक ही रास्ता होता (ताकि कोई भी उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के आराम में

[1] ……سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف……الخ، الحدیث: ۲۳۵۴، ج۴، ص۱۵۵

www.dawateislami.net

मुख़िल न हो सके) ।[1]

इस घराने का जब से मैं नोकर हुवा
सब से अच्छी मेरी नोकरी हो गई
जिब्रील से मुझे भी है निस्बत क़रीब की
वोह भी है और मैं भी हूं दरबाने मुस्त़फ़ा

ज़मीनो आस्मान में अमीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जिस त़रह़ अहले बैते अत़्हार का ख़िदमत गार होने की वज्ह से **''अस्सादिक़ वलबार्र''** (या'नी सच्चा और नेक) का लक़ब अ़त़ा हुवा इसी त़रह़ हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **''अमीन''** का लक़ब अ़त़ा हुवा । चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''عَبْدُ الرَّحْمٰن اَمِیْنٌ فِی السَّمَآءِ وَاَمِیْنٌ فِی الْاَرْضِ''** या'नी अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ज़मीनो आस्मान में अमीन (अमानत दार) हैं ।''[2]

ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वकील

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को

[1] .....الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۵۱۹۵ عبد الرحمن بن عوف، ج ۴، ص ۲۹۲
[2] .....الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، ج ۴، ص ۲۹۲

www.dawateislami.net

बारगाहे न-बवी से एक और लक़ब "**ज़मीन में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के वकील**" भी अ़ता हुवा। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) **ज़मीन में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के वकील हैं।**"[1]

उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दुआ़

बा'ज़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ख़िदमत में अपनी जाएदादें नज़्र करते थे मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात ही निराली है, वोह न सिर्फ़ अपनी जाएदादें उन की नज़्र करते बल्कि उन की दुआ़ओं से भी फ़ैज़याब होते थे। चुनान्चे,

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते अबू स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि एक बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ से) इर्शाद फ़रमाया : "मेरी अपने बा'द जिन मुआ़-मलात की त़रफ़ ख़ास तवज्जोह है उन में तुम्हारा मुआ़-मला भी है क्यूं कि साबिरीन के इ़लावा कोई भी तुम्हारी ख़िदमत पर इस्तिक़ामत इख़्तियार न करेगा।" रावी फ़रमाते हैं कि इस के

[1] .....الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۰۴

www.dawateislami.net

बा'द उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मेरे वालिदे मोह़तरम को यूं दुआ़ दी : **''ऐ अबू स-लमा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे बाप को जन्नती नहर सल-सबील के शीरीं पानी से सैराब फ़रमाए।''** क्यूं कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की अपने माल से ख़ूब ख़िदमत किया करते थे, एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ जाएदाद हदिय्या की जो 40 हज़ार दीनार में फ़रोख़्त हुई और इस के इ़लावा एक बाग़ भी नज़्र किया जो चार लाख दिरहम में फ़रोख़्त किया गया।[1]

माल में ब-र-कत की दुआ़ और उस के स-मरात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ज़ियादा दौलत मन्द थे, बल्कि ऐसे अ़ज़ीम दौलत मन्द थे कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने फ़रमाने आ़लीशान में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जन्नत में दाख़िल होने वाला सब से पहला मालदार क़रार दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मालदारी व दौलत मन्दी में इज़ाफ़े का सब से बड़ा सबब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वोह दुआ़एं हैं जिन से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नवाज़ा गया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने

---

[1] ……سنن الترمذی، کتاب المناقب، با ب مناقب عبدالرحمن بن عوف...الخ، الحدیث: ۳۷۷۰/۱۷۷۳، ج۵، ص۴۱۷

www.dawateislami.net

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह दुआ़ देते हुए सुना : **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे माल में ब-र-कत दे और क़ियामत के दिन तुम्हारे ह़िसाब में नरमी फ़रमाए ।''**[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक बार सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को स-दक़े की रग़बत दिलाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चार हज़ार दिरहम लाए और अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !** मेरा कुल माल आठ हज़ार दिरहम था चार हज़ार तो येह राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर है और चार हज़ार मैं ने घर वालों के लिये रख लिये हैं।'' इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें यूं दुआ़ दी : **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस में ब-र-कत अ़ता फ़रमाए जो तुम ने दिया और उस में भी जो अहलो इ़याल के लिये रख छोड़ा ।''** पस इस दुआ़ की ब-र-कत से इन का माल इस क़दर बढ़ा कि जब उन की वफ़ात हुई तो उन्हों ने दो बीबियां छोड़ीं उन्हें मिलने वाले तर्के की मालिय्यत **एक लाख साठ हज़ार दिरहम** थी ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

[1] .....الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۰۶

[2] .....تفسیر الخازن، سورۃ التوبۃ، تحت الآیۃ: ۷۹، ج ۲، ص ۲۶۵

www.dawateislami.net

की इस दुआ़ की ब-र-कतें बयान करते हुए फ़रमाते हैं : **"मैं जब कोई पथ्थर उठाता हूं तो मुझे उम्मीद होती है कि सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ की ब-र-कत से इस के नीचे सोना ही मिलेगा।"** पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ की ब-र-कत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रिज़्क़ के दरवाज़े इस क़दर कुशादा फ़रमा दिये कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाले पुर मलाल के बा'द जब तर्का तक़्सीम किया गया तो आप के छोड़े हुए सोने (Gold) को कुल्हाड़ों से काटते काटते लोगों के हाथों में आबले पड़ गए।[1]

मालो दौलत का मालिक होना बुरा नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जिस क़दर मालो दौलत से नवाज़ा इस से मा'लूम हुवा कि **कसीर मालो दौलत का मालिक होना बुरा नहीं** बल्कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत है। इस लिये कि अगर दौलत को ह़लाल त़रीक़े से कमा कर अच्छी जगह ख़र्च किया जाए और उस के हुक़ूक़े वाजिबा भी अदा किये जाएं तो येह दौलत स-द-क़ए जारिया जैसी ला ज़वाल ने'मत बल्कि कल बरोज़े क़ियामत اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुख़ूले जन्नत का सबब भी बन जाएगी और अगर दौलत को ह़राम

[1] .....الشفا، فصل فی اجابۃ دعائہ، ج ۱، ص ۳۲۶

www.dawateislami.net

ज़राएअ़ से कमा कर ह़राम ही में ख़र्च किया जाए तो येह दुन्या व आख़िरत के लिये ज़ह़मत बल्कि आख़िरत में दुख़ूले नार का सबब भी बन सकती है। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : ''दुन्या मीठी और सर-सब्ज़ है, जिस ने इस में से ह़लाल त़रीक़े से कमाया और इसे कारे सवाब में ख़र्च किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जिस ने इस में से ह़राम त़रीक़े से कमाया और उसे नाह़क़ ख़र्च किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ज़िल्लतो ह़क़ारत के घर (या'नी जहन्नम) को ह़लाल कर देगा।''[1]

जन्नत में जाने वाले पहले ग़नी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 346 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**करामाते सह़ाबा**'' सफ़ह़ा 129 पर है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**اَوَّلُ مَنْ یَّدْخُلُ الْجَنَّۃَ مِنْ اَغْنِیَاءِ اُمَّتِیْ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ عَوْفٍ**'' या'नी मेरी उम्मत के मालदारों में सब से पहले अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जन्नत में दाख़िल होंगे।[2]

---

[1] .....شعب الایمان، باب فی قبض الید عن الاموال المحرمۃ، الحدیث: ۵۵۲۷، ج۴، ص۳۹۶

[2] .....کنز العمال، کتاب الفضائل، ذکر الصحابۃ، عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۳۴۹۵، ج۶، جزء ۱۱ ص۳۲۸

www.dawateislami.net

ग़नी किसे कहते हैं ?

ग़नी ''**غَنِیٌّ**'' से मुश्तक़ है और इस के दो मा'ना हैं (1) मालदार होना (2) बे परवाह होना। इन दोनों मआ़नी के ए'तिबार से ग़नी की दो क़िस्में हैं चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : ''ग़नी की दो क़िस्में हैं **غَنِی بِالشَّیْءِ وَالْمَال** या'नी जो मालो दौलत ह़ासिल कर के मालदार हो जाए। और **غَنِی عَنِ الشَّیْءِ** या'नी जो मालो दौलत से बे परवा हो, उसे किसी शै की ह़ाजत व त़लब न हो।''[1]

ह़क़ीक़ी ग़नी कौन है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे मालो दौलत वाला शख़्स भी ग़नी कहलाता है लेकिन ह़क़ीक़ी ग़नी वोही है जो मालो दौलत से बे परवा हो, मालो दौलत की कसरत का नाम ''**ग़ना**'' नहीं बल्कि ''**ग़ना**'' तो दिल के ग़नी होने का नाम है चुनान्चे,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

''**لَیْسَ الْغِنٰی عَنْ کَثْرَۃِ الْعَرَضِ وَلٰکِنَّ الْغِنٰی غِنَی النَّفْسِ**'' या'नी **ग़ना** मालो अस्बाब की कसरत का नहीं बल्कि दिल के ग़नी होने का नाम है।[2]

मा'लूम हुवा कि ''**ग़ना**'' दो त़रह़ की है या'नी कोई

[1] .....فیض القدیر، تحت الحدیث: ۳۳۹۹، ج۳، ص۳۷۰

[2] .....صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب الغنی غنی النفس، الحدیث: ۶۴۴۶، ج۴، ص۲۳۳

www.dawateislami.net

मालो अस्बाब की कसरत के सबब ग़नी व मालदार कहलाता हो तो ज़रूरी नहीं ह़क़ीक़त में भी मालदार हो क्यूं कि ह़क़ीक़ी ग़नी तो वोह है जिस का दिल नूरे इलाही से मुनव्वर हो, उस के दिल में मालो दौलत की मह़ब्बत के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत कूट कूट कर भरी हुई हो और वोह अपनी दौलत को राहे ख़ुदा में क़ुरबान करने के लिये हर वक़्त तय्यार रहे।

माल कमाने से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 609 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : ❁...... "इतना कमाना फ़र्ज़ है जो अपने लिये और अहलो इ़याल के लिये और जिन का नफ़क़ा इस के ज़िम्मे वाजिब है उन के नफ़क़े के लिये और अदाए दैन (या'नी क़र्ज़ की अदाएगी) के लिये किफ़ायत कर सके ❁...... इस के बा'द इसे इख़्तियार है कि इतने ही पर बस करे या अपने और अहलो इ़याल के लिये कुछ पसमांदा रखने (या'नी बचा कर रखने) की भी सअ़्य व कोशिश करे ❁...... मां बाप मोह़ताज व तंगदस्त हों तो फ़र्ज़ है कि कमा कर उन्हें ब क़दरे किफ़ायत दे।"[1]

---

[1]......الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس عشر في الكسب، ج٥، ص٣٤٨، ٣٤٩

www.dawateislami.net

आयिन्दा के लिये माल जम्अ़ कर के रखना

आयिन्दा सालों के लिये जम्अ़ कर के रखना ताकि ब वक़्ते ज़रूरत काम आए, ऐसा करना जाइज़ है क्यूं कि ह़दीस शरीफ़ में आया है कि इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन, सुल्त़ानुल मु-तवक्किलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घर वालों के लिये एक साल तक की ग़िज़ा जम्अ़ रखा करते थे।[1]

आराइश के लिये माल कमाने का हुक्म

ज़ैबो आराइश के लिये ज़रूरत से ज़ियादा माल कमाना जाइज़ है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ईसा बिन मुह़म्मद क़रशहरी ह़-नफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की तस्नीफ़ **''अल मुब्तग़ा''** में है : ''ज़ीनतो आराइश और ख़ुशह़ाली के लिये जो कस्ब किया जाए वोह मुबाह़ या'नी जाइज़ है। ह़त्ता कि इमारतें बनाना, दीवारों पर नक़्शो निगार करना और लौंडी व ग़ुलाम ख़रीदना (येह अब नहीं पाए जाते) येह सब मुबाह़ है। इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा की रू से कि **''अच्छा माल नेक आदमी के लिये अच्छा है।''**[2]

तकब्बुर और बड़ाई जताने के लिये माल कमाना

तकब्बुर, लोगों पर फ़ख़्र और बड़ाई जताने के लिये माल कमाना ह़राम है। चुनान्चे शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो

[1].....الفتاوی البزازیۃ مع الفتاوی الھندیۃ، کتاب الزکاۃ، ج۴، ص۸۵

[2].....इस्लाहे आ'माल, जि. 1, स. 752

www.dawateislami.net

जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स तकब्बुर और बड़ाई जताने के लिये मालो दौलत ह़ासिल करता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़ब नाक होगा।"[1]

माल "ख़ैर" है

मालो दौलत अगर शर-ई तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ हो और उस का इस्ति'माल भी ख़ैर के कामों में हो तो इस में कोई ह़रज नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद क़ुरआने पाक में माल को ख़ैर फ़रमाया है। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया :

اِنۡ تَرَكَ خَيۡرَا ۖۚ اۨلۡوَصِيَّةُ (پ۲، البقرة:۱۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर कुछ माल छोड़े तो वसिय्यत कर जाए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह माल ही है जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एह़सान फ़रमाता है। अगर तक़्वा व परहेज़ गारी के साथ मालदारी भी हो तो कोई ह़रज नहीं क्यूं कि मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "**لَا بَأْسَ بِالْغِنٰی لِمَنِ اتَّقٰی**" या'नी मुत्तक़ीन के ग़नी होने में ह़रज नहीं।[2] और एक रिवायत में है कि एक मर्तबा नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पास जल्वा अफ़रोज़ होते हैं जैसे तुलूए सह़र के बा'द रात का अंधेरा

[1] ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی الزہد وقصر الامل، الحدیث: ۱۰۳۷۵، ج۷، ص۲۹۸

[2] ......سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب الحث علی المکاسب، الحدیث: ۲۱۴۱، ج۳، ص۷

www.dawateislami.net

दिन के उजाले का लबादा ओढ़ लेता है ऐसे ही सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीद उन के बेताब दिलों पर सुब्हे़ बहारां का काम करती है तो गोया महफ़िल का रंग ही बदल जाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अन्वर पर पानी के क़त़रे मोतियों की त़रह़ ह़ुस्न को चार चांद लगा रहे हैं, या'नी सरवरे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ुस्ल क्या किया ! जमाले बा कमाल और भी निखर गया है, चेह्रए अन्वर पर ख़ुशी के आसार हैं । सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ख़ुश देख रहे हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमेशा ख़ुश व ख़ुर्रम रखे, रन्जो ग़म की हवा भी न लगने दे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशी से काएनात की ख़ुशी वाबस्ता है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जमाल सब की ख़ुशी का ज़रीआ़ है । इर्शाद फ़रमाया : हां ! वाक़ेई मैं ख़ुश हूं । किसी ने वज्ह न पूछी कि इस ख़ुशी का सबब क्या है ? दौराने गुफ़्त-गू मालदारी का ज़िक्र भी छिड़ गया कि येह अच्छी है या बुरी ? तो सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस शख़्स के लिये मालदारी में ह़रज नहीं जो **अल्लाह** से डरे ।" या'नी जब ग़नी का दिल ख़ौफ़े इलाही से भरा हो तो मालदारी में कोई ह़रज नहीं ।[1]

[1] ……المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۲۳۲۱۸، ج ۹، ص ۵۳

मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 103

www.dawateislami.net

हुसूले माल का मुख़्तसर रास्ता व ज़रीआ़

मालो दौलत के हुसूल में शर-ई तक़ाज़ों को पेशे नज़र रखते हुए कोशिश करना चाहिये कि ख़ुद्दारी हाथ से न जाने पाए और न ही कोई ऐसा मुख़्तसर रास्ता व ज़रीआ़ इस्ति'माल किया जाए जिस के सबब बा'द में शरमिन्दगी का सामना करना पड़े बल्कि इस सिल्सिले में अस्लाफ़ के अन्दाज़े ह़यात को अपनाया जाए। चुनान्चे,

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ की ख़ुद्दारी

मरवी है कि हिजरत का हुक्म मिलने के बा'द जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना सब मालो मताअ़ मक्कए मुकर्रमा में छोड़ कर ख़ाली हाथ मदीनए मुनव्वरह पहुंचे तो दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरे मुहाजिरीन की त़रह़ इन्हें भी एक अन्सारी सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रिश्तए अख़ुव्वत में पिरो दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार मदीनए मुनव्वरह के मु-तमव्विल और दौलत मन्द अफ़्राद में होता था, उन्हों ने अपने ग़रीबुल वत़न और तही दामन इस्लामी भाई के लिये ईसार की एक ऐसी आ'ला मिसाल क़ाइम की जिसे रहती दुन्या तक याद रखा जाएगा और वोह येह थी कि सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना आधा माल ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में पेश कर दिया, फिर इसी पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि इस के बा'द आप ने जो कुछ अपने भाई की ख़िदमत में पेश किया इस पर तो चश्मे फ़लक भी ह़ैरान रह गई होगी कि सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस अ़ज़ीम ख़िदमत गार व पैकरे ईसार सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "मेरी दो अज़्वाज हैं, आप इन में से जिसे चाहें पसन्द फ़रमा लें, मैं उसे त़लाक़ दे दूंगा, फिर आप उस से शादी कर लीजियेगा।" मगर क़ुरबान जाइये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुद्दारी पर। आप ने अपने भाई की इस अ़ज़ीम पेशकश से कोई फ़ाएदा न उठाया। इस लिये कि अगर आप मक्के जैसी मु-तमव्विल और शानदार ज़िन्दगी ह़ासिल करना चाहते तो इस के जल्द ह़ुसूल का येह मुख़्तसर ज़रीआ़ बहुत ही आसान था मगर सुल्त़ानुल मु-तवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार के फैज़ याफ़्ता सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने जो ख़ुद्दारी का दर्स अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सीखा था, उस के सबब दौलत की येह अ़ज़ीम पेशकश आप की ख़ुद्दारी को कैसे मु-तज़ल-ज़िल कर सकती थी ? ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने भाई से फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए, मैं आप के माल से कुछ न लूंगा, बस आप इतना करम फ़रमाएं कि मुझे बाज़ार का रास्ता

www.dawateislami.net

दिखा दें।'' या'नी आप ख़ुद अपने हाथ से मेह़नत व मशक़्क़त कर के कमाना चाहते थे, पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बाज़ार **क़ैनुक़ाअ़** का रास्ता बताया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घी और पनीर की तिजारत शुरूअ़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माल में ब-र-कत पैदा फ़रमा कर अपनी करम नवाज़ियों और बख़्शिशों के दरवाज़े खोल दिये।[1]

मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ हमें भी मालो दौलत के ह़ुसूल में ऐसा मुख़्तसर और आसान ज़रीआ़ व रास्ता इख़्तियार करने के बजाए अपनी कोशिश और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम पर भरोसा करना चाहिये ताकि हमारी आयिन्दा नस्लें अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलने वाली हों।

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें
उ़न्हें नेक तू बनाना म-दनी मदीने वाले

माल जम्अ़ करने, न करने की सूरतें

माल जम्अ़ करने, न करने की सूरतों से मु-तअ़ल्लिक़ बारगाहे र-ज़विय्यत में होने वाले एक सुवाल के जवाब का ख़ुलासा म-दनी फूलों की सूरत में पेशे ख़िदमत है :

❁..... जिस शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर दुन्या से कनारा

[1] .....صحیح البخاری، الحدیث: ۲۰۴۸، ج ۲، ص ۴ ملتقطاً

www.dawateislami.net

कशी इख़्तियार कर ली हो और उस पर अहलो इ़याल की ज़िम्मे दारी भी न हो या अहलो इ़याल ही न हों और उस ने अपने रब से वा'दा कर रखा हो कि अपने पास दुन्या की दौलत न रखेगा तो उस पर लाज़िम है कि अपने वा'दे के सबब माल जम्अ़ न करे, अगर कुछ बचा कर रखेगा तो येह वा'दा ख़िलाफ़ी होगी और सज़ा का ह़क़दार होगा।

❁.....जिसे अपनी ह़ालत मा'लूम हो कि ह़ाजत से ज़ाइद जो कुछ बचा कर रखता है नफ़्स उसे सर-कशी व ना फ़रमानी पर उभारता है या किसी ना फ़रमानी की आ़दत पड़ी है उस में ख़र्च करने लगता है तो उस पर मा'सियत से बचना फ़र्ज़ है और जब उस का येही त़रीक़ा हो कि बाक़ी माल अपने पास नहीं रखता तो इस ह़ालत में उस पर ह़ाजत से ज़ाइद सब आमदनी को भलाई के कामों में सर्फ़ कर देना लाज़िम होगा।

❁.....जो ऐसा बे सब्र हो कि एक वक़्त का फ़ाक़ा बरदाश्त करना भी उस की हिम्मत से बाहर हो या'नी फ़ाक़े की सूरत में शिक्वा करने लगे अगर्चे सिर्फ़ दिल में ऐसा करे और ज़बान तक न लाए या ना जाइज़ त़रीक़ों या'नी चोरी या भीक वग़ैरा का मुर-तकिब हो तो उस पर लाज़िम है कि ब क़दरे ह़ाजत कुछ माल जम्अ़ रखे।

❁.....अगर मज़दूर है कि रोज़ का रोज़ खाता है तो उस पर

www.dawateislami.net

लाज़िम है कि इतना ही माल जम्अ़ रखे जो एक दिन के लिये काफ़ी हो।

❁.....और तन-ख़्वाह दार है या किसी मकान व दुकान वग़ैरा के माहाना किराए पर गुज़र बसर है तो इतना माल जम्अ़ रखे जो एक महीने के लिये काफ़ी हो।

❁.....और ज़मीन दार है कि फ़स्ल छ^{6} माह या साल पर पाता है तो उस पर छ^{6} महीने या साल भर की ज़रूरिय्यात के लिये माल जम्अ़ रखना लाज़िम है।

❁.....याद रहे कि बन्दे पर अस्ल ज़रीअ़ए मआ़श ब क़दरे किफ़ायत बाक़ी रखना मुत्लक़न लाज़िम है।

❁.....अगर माल जम्अ़ न रखने में किसी का दिल परेशान हो, इबादत व ज़िक्रे इलाही में ख़लल पड़ता हो तो ब क़दरे ह़ाजत जम्अ़ रखना अफ़्ज़ल है।

❁.....और अगर माल जम्अ़ रखने में किसी का दिल मुन्तशिर और माल की ह़िफ़ाज़त में ही लगा रहे तो जम्अ़ न रखना अफ़्ज़ल है कि अस्ल मक़्सूद ज़िक्रे इलाही के लिये फ़ारिग़ होना है और जो शै उस में ख़लल डालने वाली हो मम्नूअ़ है। क्यूं कि जो लोग नफ़्से मुत्मइन्ना के मालिक हों या'नी माल होने न होने से उन का दिल परेशान न हो वोह बा इख़्तियार हैं कि चाहें तो बक़िय्या माल स-दक़ा व ख़ैरात कर दें या अपने पास ही रखें। और इ़याल दार भी

www.dawateislami.net

अपने नफ़्स के ह़क़ में मुन्फ़रिद के हुक्म में है या'नी मुआ़-मला उस की अपनी ज़ात का हो तो वोह मुन्फ़रिद के हुक्म में है मगर बाल बच्चों की कफ़ालत शरीअ़त ने उस पर फ़र्ज़ की, वोह उन को मजबूर नहीं कर सकता कि वोह दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर लें और भूक प्यास पर सब्र से काम लें, अपनी जान को जितना चाहे आज़्माइश में डाल सकता है मगर बाल बच्चों को ख़ाली छोड़ना उस पर ह़राम है।

❁.....सब माल राहे ख़ुदा में ख़र्च कर देना उसी बन्दे के लिये जाइज़ है जिस के सब बाल बच्चे साबिर व **मु-तवक्किल** हों।[1]

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की म-दनी सोच

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 39 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, **''ख़ज़ाने के अम्बार''** सफ़ह़ा 20 पर पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَلِک ह़ज़रते सय्यिदुना

[1]..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि.10, स. 311 ता 327 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز की ज़ाहिरी ह़यात के आख़िरी लम्ह़ात में ह़ाज़िर हुए और कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप भी बे मिसाल ज़िन्दगी गुज़ार कर दुन्या से तशरीफ़ ले जा रहे हैं, आप के **13** बच्चे हैं लेकिन विरासत में उन के लिये कोई मालो अस्बाब नहीं छोड़ा !" येह सुन कर **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने इर्शाद फ़रमाया : **"मैं ने अपनी औलाद का ह़क़ रोका नहीं और दूसरों का इन को दिया नहीं** और मेरी औलाद की दो ह़ालतें हैं **अगर वोह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की इत़ाअ़त करेंगे तो वोह उन को किफ़ायत फ़रमाएगा क्यूं कि अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **नेक लोगों को किफ़ायत फ़रमाता है और अगर मेरी औलाद ना फ़रमान हुई तो मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मेरे बा'द माली ए'तिबार से उन की ज़िन्दगी कैसे गुज़रेगी।"**[1]

बाल बच्चों की ज़रूरिय्यात पूरी करना वाजिब है

अगर किसी के पास माल है तो उसे येही हुक्म है कि स-दक़ा करने के बजाए औलाद की ज़रूरत के लिये रख छोड़े।[2] क्यूं कि बाल बच्चों की कफ़ालत शरीअ़त ने इस पर फ़र्ज़ की, वोह इन को मजबूर नहीं कर सकता कि वोह दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर लें और भूक प्यास पर सब्र से काम लें, अपनी जान को जितना चाहे आज़्माइश में डाल सकता है मगर बाल बच्चों को

[1]...... إحياءُ العُلوم، ج٣، ص٢٨٨

[2]...... ख़ज़ाने के अम्बार, स. 20

www.dawateislami.net

ख़ाली छोड़ना इस पर ह़राम है । जैसा कि मोह़सिने काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **كَفٰى بِالْمَرْءِ اِثْمًا اَنْ يُّضَيِّعَ مَنْ يَّقُوْتُ** या'नी बन्दे के गुनाहगार होने के लिये येही काफ़ी है कि जिस का नफ़क़ा उस पर लाज़िम है वोह उसे ज़ाएअ़ कर दे ।[1]

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि इ़याल (बीवी बच्चों) को भूक पर क़ाइम रखना जाइज़ नहीं इस को उन के ह़क़ में ऐसा मुम्किन नहीं और इसी त़रह़ कमाने वाले को तवक्कुल कर लेना भी जाइज़ नहीं, इ़याल के ह़क़ में तवक्कुल करते हुए उन्हें छोड़ देना या तवक्कुल करते हुए उन के अख़्राजात का एहतिमाम न करते हुए बैठ जाना ह़राम है और अगर येह उन की हलाकत का सबब बन गया तो येह शख़्स पकड़ा जाएगा ।[2]

मेरे ग़ौस का वसीला, रहे शाद सब क़बीला
इन्हें ख़ुल्द में बसाना, म-दनी मदीने वाले

माल वु-रसा के लिये छोड़ने का ह़ुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार

[1]..... سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی صلۃ الرحم، الحدیث: ۱۲۹۶، ج ۲، ص ۱۸۴

[2]..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 323

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारा अपने वारिसों को मालदार छोड़ कर जाना इन्हें ग़रीब व मोह़ताज छोड़ने से बेहतर है कि वोह लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें ।''[1]

तक़्वा व फ़तवा में फ़र्क़

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ गोई में किसी की रिआ़यत नहीं फ़रमाते थे, इसी ह़क़ गोई की बिना पर तकालीफ़ भी उठाते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आ कर मुसल्मान हुए जब कि कुफ़्फ़ार का बहुत ज़ोर था और बार बार मजलिसे कुफ़्फ़ार में आ कर अपने इस्लाम व ईमान का ए'लान करते रहे और उन के हाथों बहुत ही ईज़ा पाते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मौक़िफ़ येह था कि माल रखना ह़राम है जो पाओ फ़ौरन ख़र्च कर दो और वोह इस पर आ़मिल भी थे ।

तज डाल मालो धन को
कोड़ी न रख कफ़न को
जिस ने दिया तन को
देगा वोही कफ़न को

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मौजू-दगी में ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से

[1] .....صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب ان یترك ورثته اغنیاء ...الخ، الحدیث: ۲۷۴۲، ج ۲، ص ۲۳۲ ملتقطاً

www.dawateislami.net

मस्अला पूछा कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत माल छोड़ कर गए हैं, आप का क्या ख़याल है आया माल जम्अ़ करना और बाल बच्चों के लिये छोड़ जाना जाइज़ है या नहीं ? चूंकि ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ाहिद तरीन सह़ाबा में शुमार होते थे, ज़ोह्द व तर्के दुन्या की अह़ादीस पर सख़्ती से आ़मिल थे, इस लिये उन की मौजू़-दगी में येह सुवाल व जवाब हुए ताकि उन के सामने हुक्मे शर-ई और ज़ोह्द, नीज़ तक़्वा व फ़तवा में फ़र्क़ वाज़ेह़ हो जाए, या'नी माल जम्अ़ रखना, बा'दे वफ़ात छोड़ जाना ह़लाल है जब कि इस से ज़कात, फ़ित्रा, क़ुरबानी, हुक़ूक़ुल इ़बाद अदा किये जाते रहे हों येह कन्ज़ में दाख़िल नहीं जिस की क़ुरआने करीम में बुराई आई है।[1]

मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز की सोच एक थी, येह लोग मालो दौलत से भागते और इन के पास माल कभी न ठहरता बल्कि इधर आता और उधर चला जाता था।

जो लोग नफ़्से **मुत्मइन्ना के मालिक हों या'नी माल होने न होने से उन का दिल परेशान न हो वोह बा इख़्तियार हैं कि चाहें तो बक़िय्या माल स-दक़ा व ख़ैरात कर दें या अपने पास ही रखें।** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन्हीं लोगों में होता है जिन का दिल माल होने न होने

[1].....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 88...जि. 8, स. 574, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

से कभी परेशान न हुवा बल्कि कई बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने राहे ख़ुदा में अपना माल पानी की त़रह़ बहाया कि ख़ुद मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को माल में ब-र-कत की दुआ़ओं से नवाज़ा।

वु-रसा के लिये कितना माल छोड़ा जाए ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि उस (माल) की मिक़्दार जो इन (वारिसों) के लिये छोड़ना मुनासिब है हमारे इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से चार हज़ार दिरहम मरवी है या'नी हर एक को इतना ह़िस्सा पहुंचे और इमाम अबू बक्र फ़ज़्ल से दस हज़ार दिरहम।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ताजिरों में शुमार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तिजारत शुरूअ़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपनी बे शुमार ब-र-कतों और बे ह़िसाब मालो दौलत से नवाज़ा और इन का शुमार उस ज़माने के बड़े ताजिरों में होने लगा बल्कि एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ताजिरों में होता है।[2]

---

[1].....फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 326

[2]....فردوس الاخبار، الحدیث: ۲۷۸۹، ج ۱، ص ۳۷۵

www.dawateislami.net

"तिजारत अम्बियाए किराम की सुन्नत है" के बाइस हुरूफ़ की निस्बत से तिजारत के 22 म-दनी फूल

﴾1﴿ मरवी है कि "रब तआ़ला ने रिज़्क़ के दस हि़स्से किये नव हि़स्से ताजिर को दिये और एक हि़स्सा सारी दुन्या को।"[1]

﴾2﴿ **रसूलूल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**ताजिर** रास्त गो अमानत दार अम्बिया व सिद्दीक़ीन व शु-हदा के साथ होगा।"[2]

﴾3﴿ तुज्जार क़ियामत के दिन फ़ुज्जार (बदकार) उठाए जाएंगे मगर जो ताजिर मुत्तक़ी हो और लोगों के साथ एह़सान करे और सच बोले।[3]

﴾4﴿ तमाम कमाइयों में ज़ियादा पाकीज़ा उन ताजिरों की कमाई है कि जब वोह बात करें झूट न बोलें और जब उन के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत न करें और जब वा'दा करें उस का ख़िलाफ़ न करें और जब किसी चीज़ को ख़रीदें तो उस की मज़म्मत (बुराई) न करें और जब अपनी चीज़ें बेचें तो उन की ता'रीफ़ में मुबा-लग़ा न करें और उन पर किसी का आता हो तो देने में टाल मटोल न करें और जब अपनी शै किसी से लेनी हो तो सख़्ती न करें।[4]

---

[1].....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 169

[2].....سنن الترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی التجار.....الخ، الحدیث: ۱۲۱۳، ج۳، ص۵

[3].....سنن الترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی التجار.....الخ، الحدیث: ۱۲۱۴، ج۳، ص۵

[4].....شعب الایمان، الحدیث: ۴۸۵۴، ج۴، ص۲۲۱

www.dawateislami.net

﴾5﴿ तिजारत[1] बहुत उ़म्दा और नफ़ीस काम है, मगर अक्सर तुज्जार किज़्ब बयानी (झूट) से काम लेते बल्कि झूटी क़समें खा लिया करते हैं, इसी लिये अक्सर अह़ादीस में जहां तिजारत का ज़िक्र आता है, झूट बोलने और झूटी क़स्म खाने की साथ ही साथ मुमा-न-अ़त भी आती है और येह वाक़िआ़ भी है कि अगर ताजिर अपने माल में ब-र-कत देखना चाहता है तो इन बुरी बातों से गुरेज़ करे। ताजिरों की इन्हीं बद उ़न्वानियों की वज्ह से बाज़ार को बद तरीन बुक़्अ़ए ज़मीन (ज़मीन का बद तरीन ह़िस्सा, मक़ाम) फ़रमाया गया और येह कि शैत़ान हर सुब्ह़ को अपना झन्डा ले कर बाज़ार में पहुंच जाता है और बे ज़रूरत बाज़ार में जाने को बुरा बताया गया।[2]

﴾6﴿ ताजिर के लिये तिजारत के ज़रूरी मसाइल सीखना फ़र्ज़ है। चुनान्चे फ़तावा आ़लमगीरी में है : जब तक ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल मा'लूम न हों कि कौन सी बैअ़ जाइज़ है और कौन सी ना जाइज़, उस वक़्त तक तिजारत न करे।[3]

﴾7﴿ तिजारत में इतना मश्ग़ूल न हो कि **ज़िक्रुल्लाह** से भी ग़ाफ़िल हो जाए। चुनान्चे मरवी है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

---

[1]...... तिजारत के तफ़्सीली मसाइल के लिये बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 608, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 81 का मुता-लआ़ कीजिये।

[2]...... बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 613

[٣]......الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس والعشرون في البيع... إلخ، ج٥، ص٣٦٣

www.dawateislami.net

ख़रीदो फ़रोख़्त और तिजारत किया करते थे मगर जब **हुक़ूक़ुल्लाह** में से कोई ह़क़ पेश आ जाता तो ख़रीदो फ़रोख़्त और तिजारत उन को **ज़िक्रुल्लाह** से न रोकती, बल्कि पहले वोह उस ह़क़ को अदा करते।[1]

﴾8﴿ ताजिर को चाहिये कि ख़रीदो फ़रोख़्त में नरमी इख़्तियार करे कि ह़दीसे पाक में इस की मद्ह़ व ता'रीफ़ आई है। चुनान्चे सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म करे जो बेचने और ख़रीदने और तक़ाज़े में आसानी करे।[2]

﴾9﴿ यूं तो हर मुसल्मान का ख़ुश ख़ुल्क़ होना लाज़िम है मगर ताजिर को ख़ुसूसन ख़ुश ख़ुल्क़ी चाहिये कि येह तिजारत में ब-र-कत का एक सबब है, जो ताजिर बद ख़ुल्क़ होता है उ़मूमन देखने में आया है कि उस की तिजारत से ब-र-कत उठा ली जाती है जो गाहक उस के पास एक बार आता है फिर उस की बद मिज़ाजी की वज्ह से दोबारा नहीं आता।

﴾10﴿ ताजिर को नेक चलन, दियानत दार होना ज़रूरी है, बद चलन, बद मआ़श, ह़राम ख़ोर कभी तिजारत में काम्याब नहीं हो सकता। दियानत दारी से ही लोग इस पर भरोसा

---

[1]......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب التجارۃ فی البر، ج ۲، ص ۸

[2]......صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب السھولۃ والسماحۃ...إلخ، الحدیث: ۲۰۷۶، ج ۲، ص ۱۲

www.dawateislami.net

करेंगे। कम तोलने वाला, झूटा ख़ाइन कुछ दिन तो ब ज़ाहिर नफ़्अ़ कमा लेता है मगर आख़िर कार सख़्त नुक़्सान उठाता है।

﴾11﴿ यूं तो दुन्या में कोई काम बिग़ैर मेहनत के नहीं होता मगर तिजारत सख़्त मेहनत, चुस्ती और होशियारी चाहती है। काहिल सुस्त आदमी कभी किसी काम में काम्याब नहीं हो सकता। मसल मश्हूर है कि **''बिग़ैर मेहनत तो लुक़्मा भी मुंह में नहीं जाता''** ताजिर ख़्वाह कितना ही बड़ा आदमी बन जाए मगर सारे काम नोकरों पर ही न छोड़ दे बा'ज़ काम ख़ुद अपने हाथ से भी करे, इस की ब-र-कत से सुस्ती व काहिली व नोकरों की बद गुमानी इस के क़रीब नहीं आएगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

﴾12﴿ तिजारत के उसूल में से येह भी है कि अव्वलन बड़ी तिजारत शुरूअ न की जाए बल्कि मा'मूली काम से शुरूअ़ करे और फिर आहिस्ता आहिस्ता इस की त़रफ़ पेश क़दमी करे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को लकड़ियां काट कर फ़रोख़्त करने का हुक्म फ़रमाया।

﴾13﴿ तिजारत शुरूअ़ करने से पहले तिजारती काम का इन्तिख़ाब ज़रूरी है कि हर काम हर किसी के मुवाफ़िक़ नहीं होता, एक शख़्स किसी चीज़ की तिजारत करता है तो उस से बहुत नफ़्अ़ उठाता है इस को देख कर दूसरा शुरूअ़ करता है मगर उसे वोह नफ़्अ़ नहीं मिलता क्यूं कि वोह उस के मुनासिब नहीं।

www.dawateislami.net

﴾14﴿ तिजारत शुरूअ़ करने से क़ब्ल मु-तअ़ल्लिक़ा मुआ़-मले की मुकम्मल मा'लूमात ह़ासिल कर ले कि बिग़ैर मा'लूमात के जो तिजारत शुरूअ़ की जाए उस में सिवाए नुक़्सान के कुछ ह़ासिल नहीं होता बल्कि सब दूसरों के हाथ चला जाता है।

﴾15﴿ जल्द बाज़ी से काम न ले, बा'ज़ ताजिर तिजारत शुरूअ़ करते ही करोड़ पती बनने के ख़्वाब देखना शुरूअ़ कर देते हैं अगर दो दिन फ़ाएदा न हो तो वोह काम छोड़ कर दूसरा शुरूअ़ कर देते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर तवक्कुल और भरोसा कर के इस्तिक़ामत इख़्तियार करे कि येह भी ब-र-कत का एक सबब है।

﴾16﴿ बा'ज़ ताजिर जल्द अज़ जल्द मालदार बनने के चक्कर में ज़ियादा नफ़्अ़ पर तिजारत करते हैं एक ही चीज़ दीगर जगह सस्ती बिकती है और इन के हां महंगी, नफ़्अ़ के हुसूल में ख़रीदो फ़रोख़्त के इ़लावा बाज़ार के उ़र्फ़ का भी ख़याल रखा जाए, नफ़्अ़ ह़ासिल करने का एक उसूल येह भी है कि आ़म चीज़ों में नफ़्अ़ कम लिया जाए जब कि नादिरो नायाब चीज़ों में नफ़्अ़ की मिक़्दार को बढ़ाया जा सकता है।

﴾17﴿ तिजारत की नाकामी का एक सबब बे जा ख़र्च भी है, बा'ज़ ना वाक़िफ़ ताजिर मा'मूली कारोबार पर बहुत ख़र्च कर डालते हैं। इन की छोटी सी दुकान इतना ख़र्च नहीं उठा सकती आख़िर नाकामी का सामना करना पड़ता है।

www.dawateislami.net

﴾18﴿ बाज़ार (मार्केट) के उ़र्फ़ से वाक़िफ़िय्यत भी तिजारत में काम्याबी की अस्ल है बारहा देखा गया है कि कई ताजिर मार्केट के उ़र्फ़ से वाक़िफ़ न होने कि बिना पर धोका खाजाते हैं और उन्हें नाकामी का सामना करना पड़ता है।

﴾19﴿ बिला वज्ह माल को रोके रखना भी तिजारत में बे ब-र-कती का बाइस है, बा'ज़ ताजिर क़ीमत ज़ियादा होने के इन्तिज़ार में माल को रोके रखते हैं, वोह सख़्त ग़-लत़ी करते हैं कि कभी बजाए महंगाई के माल सस्ता हो जाता है और अगर कुछ मा'मूली नफ़्अ़ पा भी लिया तो भी ख़ास फ़ाएदा ह़ासिल नहीं होता। साल में एक बार सो रुपिया नफ़्अ़ कमाने से रोज़ का दस रुपे नफ़्अ़ बेहतर है।[1] क्यूं कि **एह़्तिकार** (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) मम्नूअ़ है या'नी खाने की चीज़ को रोक लेना ताकि गिरां होने पर फ़रोख़्त करे मन्अ़ है। चुनान्चे एक ह़दीस में है : जो चालीस रोज़ तक **एह़्तिकार** करेगा, अल्लाह तआ़ला उस को जुज़ाम व इफ़्लास में मुब्तला करेगा। **एह़्तिकार** इन्सान के खाने की चीज़ों में भी होता है, म-सलन अनाज और अंगूर बादाम वग़ैरा और जानवरों के चारे में भी होता है जैसे घास, भूसा। **एह़्तिकार** वहीं कहलाएगा जब कि इस का ग़ल्ला रोकना वहां वालों के लिये मुज़िर हो या'नी इस की वज्ह से गिरानी हो जाए या येह सूरत

[1]..... इस्लामी ज़िन्दगी, स. 156 मफ़्हूमन

www.dawateislami.net

हो कि सारा ग़ल्ला इसी के क़ब्ज़े में है, इस के रोकने से क़हत पड़ने का अन्देशा है, दूसरी जगह ग़ल्ला दस्त-याब न होगा।[1]

﴾20﴿ माले तिजारत को ज़कात की अदाएगी कर के पाको साफ़ भी करता रहे कि जिस माल से ज़कात अदा नहीं की जाती उस से ब-र-कत उठा ली जाती है।

﴾21﴿ ताजिर के लिये जिस त़रह़ अपने गाहक से ख़ुश अख़्लाक़ी ज़रूरी है इसी त़रह़ दीगर ताजिरों से भी ह़ुस्ने सुलूक निहायत ज़रूरी है कि बिला वज्हे शर-ई दूसरे तुज्जार के साथ ना-रवा सुलूक इस की अपनी तिजारत पर बुरा असर डाल सकता है, नीज़ इन के बारे में ह़सद व बुग़्ज़ो कीना से भी अपने आप को बचा कर रखे।

﴾22﴿ फ़ारिग़ व बेकार बैठने से ह़लाल कमाना अफ़्ज़ल है कि ह़लाल से इ़बादत में ज़ौक़, नेकियों का शौक़ और इत़ाअ़त का जज़्बा पैदा होता है जिस घर में सिर्फ़ खाने वाले हों कमाने वाला न हो तो वोह घर चन्द दिन का मेहमान है।[2]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल किसी के पास चार पैसे आ जाएं तो उस में अकड़ पैदा हो जाती है, घर वालों, दोस्त अह़बाब वग़ैरा के साथ उस का रवय्या यक्सर तब्दील हो

[1].....बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 482 मुल-त-क़त़न

[2].....मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 611, इस्लामी ज़िन्दगी, स. 149

www.dawateislami.net

जाता है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मालदार होने के बा वुजूद निहायत मुन्कसिरुल मिज़ाज और सादा त़बीअ़त के मालिक थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी वज़्अ़ क़त़्अ़ में सादगी व इन्किसारी की वज्ह से अपने गुलामों के दरमियान पहचाने ही नहीं जाते थे कि गुलाम कौन है और आक़ा कौन ?[1]

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ की सख़ावत

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ने **"मिरआतुल मनाजीह़"** में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़ावत की चन्द झल्कियां ज़िक्र की हैं, मुला-ह़ज़ा कीजिये :

- .....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़यात शरीफ़ में आप ने एक बार **चार ह़ज़ार दीनार** ख़ैरात किये।
- .....एक बार **चालीस ह़ज़ार दीनार** राहे ख़ुदा में दिये।
- .....एक बार **पांच सो घोड़े** मुजाहिदों को दिये।
- .....एक बार **डेढ़ ह़ज़ार ऊंट** राहे ख़ुदा में दिये।
- .....वफ़ात के वक़्त **पचास ह़ज़ार दीनार** ख़ैरात करने की वसिय्यत की।

[1] .....سیر اعلام النبلاء، باب عبد الرحمن بن عوف، ج ۳، ص ۵۶

www.dawateislami.net

❁.....एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हुए तो अपना **तिहाई माल** ख़ैरात करने की वसिय्यत की मगर बा'द में आराम हो गया तो वोह माल ख़ुद ही ख़ैरात कर दिया।

❁.....एक बार सह़ाबा से कहा कि जो अहले बद्र से हो उसे फ़ी कस **चार सो दीनार** मैं दूंगा।

❁.....एक बार एक दिन में **डेढ़ लाख दीनार** ख़ैरात किये, रात को ह़िसाब लगाया। फिर बोले कि मेरा सारा माल मुहाजिरीन व अन्सार पर स-दक़ा है ह़त्ता कि फ़रमाया मेरी क़मीस फ़ुलां को और मेरा इ़मामा फ़ुलां को। ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाजिर हुए। अ़र्ज़ किया **: या रसूलल्लाह !** अ़ब्दुर्रह़मान के स-दक़ात क़बूल, इन्हें बे ह़िसाब जन्नती होने की ख़बर दीजिये।

❁..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **तीस हज़ार ग़ुलाम** आज़ाद किये।

❁.....उम्महातुल मुअमिनीन की ख़िदमत में एक बाग़ पेश किया (जो चार लाख दिरहम में फ़रोख़्त हुवा)।[1]

तन मन धन सब अपना लुटा कर
आप के इ़श्क़ में ख़ुद को गुमा कर
कोई बुल्हे शाह बना है तो कोई क़लन्दर ला'ल
मदीने वाले मेरे लजपाल

---

[1].....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 445

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ख़ौफ़े ख़ुदा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी उन्हीं लोगों में होता है जिन्हों ने माल की सूरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से **अल्लाह** की मख़्लूक़ को ख़ूब सैराब किया मगर ख़ुद कभी भी दौलत के नशे में आ कर ग़ाफ़िल न हुए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बे शुमार मालो दौलत से नवाज़ा मगर येह दुन्यावी मालो दौलत, और ऐ़शो इ़श्रत कभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ल्बे अत़्हर पर असर अन्दाज़ न हो सकी जिस का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाया जा सकता है कि एक रोज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने खाना रखा गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस दिन रोज़े से थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की लज़ीज़ ने'मतें देखीं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद कर दिये गए ह़ालां कि वोह मुझ से बेहतर और लाइक़े एह़तिराम थे, जब उन का इन्तिक़ाले पुर मलाल हुवा तो कफ़न के लिये मुयस्सर कपड़ा इतना था कि अगर सर को छुपाते तो पैर खुल जाते और पैरों को छुपाते तो सर खुल जाता और सय्यिदुश्शु-हदा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन व तक्फ़ीन में भी एक ना क़ाबिले फ़रामोश दर्से आख़िरत है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद किये गए तो सिवाए एक चादर के कफ़न के लिये कुछ भी

www.dawateislami.net

मुयस्सर न था और एक हम हैं कि हम पर दुन्या कुशादा कर दी गई है, मुझे डर है कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी नेकियों का सिला हमें (दुन्या में ही) जल्दी मिल रहा हो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों से आंसूओं का एक सैले रवां जारी हो गया यहां तक कि सामने मौजूद खाने की त़रफ़ तवज्जोह ही न रही।[1]

अस्लाफ़ की सीरत को याद रखना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस क़दर मालो दौलत रखने के बा वुजूद दुन्या से बे रग़बती का आ़लम येह था कि कभी अपना माज़ी नहीं भूले बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी इस्लाम के अव्वलीन दौर को याद करते, इस की सुनह्री यादें ताज़ा हो जातीं, ग़ुरबत व इफ़्लास के अव्वलीन दौर में दुन्या से रुख़्सत होने वाले अपने मुसल्मान भाई याद आते तो मौजूदा मालो दौलत की फ़रावानी यक्सर भूल जाते क्यूं कि आप जानते थे कि येह ना-पाएदार दुन्या यहीं रह जाएगी, अस्ल काम्याबी व कामरानी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुर्ख़-रू हो कर हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी में राह़त पाना है। हमें भी चाहिये कि हम इस फ़ानी और आ़रिज़ी दुन्या में दिल लगाने के बजाए अ-बदी व सर-मदी काम्याबी पाने को अपना मक़्सूदे ह़यात बना लें और जिस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन्तिहाई

[1] ……صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب اذا لم یوجد الا ثوب واحد، الحدیث: ۱۲۷۵، ج۱، ص۴۳۱

www.dawateislami.net

मालदार होने के बा वुजूद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सीरत को याद रखते थे हम भी इन की सीरत को राहे ह़यात पर गामज़न रहने के लिये मश्अ़ले राह बना लें ।

दुन्यवी लज़्ज़ात से कनारा कशी

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हमारे दीगर अस्लाफ़ ने कभी भी दुन्यवी लज़्ज़ात की त़रफ़ तवज्जोह न फ़रमाई और ख़ुद हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने लज़्ज़ाते दुन्यविय्या से कनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई । जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** सफ़ह़ा 645 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : पारह 26 **सू-रतुल अह़क़ाफ़** की आयत नम्बर 20 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَذْهَبْتُمْ طَیِّبٰتِكُمْ فِیْ حَیَاتِكُمُ الدُّنْیَا وَ اسْتَمْتَعْتُمْ بِهَاۚ فَالْیَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ

(پ۲۶، الاحقاف:۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपने ह़िस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा ।

www.dawateislami.net

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते **सदरुल अफ़ाज़िल** अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस आयत में **अल्लाह तआ़ला** ने दुन्यवी लज़्ज़ात इख़्तियार करने पर कुफ़्फ़ार को तौबीख़ (या'नी मलामत) फ़रमाई तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने लज़्ज़ाते दुन्यविय्या से कनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई ।"

बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसे पाक में है, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी तक हुज़ूर के अहले बैते अत़्हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने कभी जव की रोटी भी दो रोज़ बराबर न खाई । येह भी ह़दीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था दौलत सराए अक़्दस (या'नी मकाने आ़लीशान) में (चूल्हे में) आग न जलती थी, चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी ।

खाना तो देखो जव की रोटी, बे छना आटा रोटी भी मोटी
वोह भी शिकम भर रोज़ न खाना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم
कौनो मकां के आक़ा हो कर, दोनों जहां के दाता हो कर
फ़ाक़े से हैं सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उस शाहे ख़ुश ख़िसाल महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक ह़ाल है, जिस के हाथों में दोनों जहां के ख़ज़ानों की चाबियां दे दी गईं। मेरे मक्की म-दनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़क़्र इख़्तियारी था। वरना ख़ुदा की क़सम ! जिस को जो कुछ मिलता है वोह सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े ही में मिलता है और काएनात की हर हर शै को नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैज़ पहुंचता है।[1]

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने त़ाक़त व क़ुदरत के बा वुजूद फ़क़्र को इख़्तियार फ़रमाया ताकि उम्मत को येह सबक़ ह़ासिल हो कि दुन्यावी लज़्ज़तों की ख़ात़िर मारे मारे फिरना दानिश मन्दी नहीं। येही वज्ह है कि जिन के दिलों में अपने नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की महब्बत की शम्अ़ रोशन होती है वोह हमेशा अपने नबी की सुन्नत पर ही अ़मल करते हैं। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से बढ़ कर नबी की महब्बत किस के दिल में हो सकती है कि जिन की कुल काएनात ही सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर के दीदार की एक झलक थी, जिन का ओढ़ना बिछोना ही अपने महबूब की सुन्नतें और यादें थीं। चुनान्चे,

---

[1].....फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : पेट का कुफ़्ले मदीना, स. 645 ता 647

www.dawateislami.net

आंखें अश्कबार हो गईं

ह़ज़रते नौफ़ल बिन इयास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक दिन हम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ उन के घर चले गए, खाने के वक़्त जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने गोश्त और रोटी पेश की गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **आंखें अश्कबार हो गईं,** मैं ने वज्ह पूछी तो फ़रमाने लगे : ''ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से पर्दा फ़रमा गए और ह़ाल येह था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अहले ख़ाना ने कभी पेट भर कर जव की रोटी तक न खाई।''[1]

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़श्क़ पर हज़ार जानें क़ुरबान ! मह़ब्बत हो तो ऐसी कि जब मह़बूब की भूक याद आई तो अश्कों की बरसात उन की अपनी भूक को बहा ले गई।

ह़क़ीक़त में वोह लुत़्फ़े ज़िन्दगी पाया नहीं करते
जो यादे मुस्त़फ़ा से दिल को बहलाया नहीं करते

खाओ पियो और जान बनाओ

एक हम हैं और हमारे इ़श्क़ो मह़ब्बत के खोखले दा'वे !!! ख़ूब पेट भर कर खाते हैं कि बद ह़ज़्मी जान ही नहीं छोड़ती, बे शुमार बीमारियों से तो गोया हमारी गहरी दोस्ती हो चुकी है, खाने पीने से चन्द दिनों की दूरी बरदाश्त नहीं होती बल्कि नफ़्स

[1] ……حلیۃ الاولیاء، عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۱۷، ج ۱، ص ۱۴۳

www.dawateislami.net

की बेताबी दूर करने के लिये खाने पीने का बहाना तलाश किया जाता है, लज़ीज़ चट्पटे खाने पकाए जाते हैं और बहुत सी बीमारियों के इस्तिक़्बाल के लिये ज़बर दस्त दा'वत का एहतिमाम किया जाता है, ख़ूब पेट भर कर इस त़रह़ खाते हैं जैसे ज़िन्दगी का आख़िरी खाना हो, इस के बा'द खाना मुयस्सर ही न होगा, गोया हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद ही येही है कि **''खाओ पियो और जान बनाओ''**। ह़ालां कि खाने के मुआ़-मले में हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का क़त्अ़न येह त़र्ज़े अ़मल नहीं था।

भूक बादशाह और शिकम सैरी ग़ुलाम है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** सफ़ह़ा 682 पर **क़ूतुल क़ुलूब** के ह़वाले से नक़्ल किये जाने वाले तीन म-दनी फूल मुला-ह़ज़ा कीजिये :

❁..... **''भूक बादशाह और शिकम सैरी ग़ुलाम है, भूका इ़ज़्ज़त वाला और (ज़ियादा) पेट भरा ज़लील है।''**

❁..... **''भूक सब की सब इ़ज़्ज़त है जब कि पेट भरना सरासर ज़िल्लत है।''**

❁..... बा'ज़ अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से मन्क़ूल है : **''भूक आख़िरत की कुन्जी और ज़ोह्द (या'नी दुन्या से बे रग़बती) का दरवाज़ा है जब कि पेट भरना दुन्या की कुन्जी और (दुन्या की त़रफ़) रग़बत का दरवाज़ा है।''**[1]

[1] .....قُوْتُ الْقُلُوب، ج ۲، ص ۲۸۸

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : "आप भूका रहने पर इतना ज़ोर क्यूं देते हैं ?" फ़रमाया : **"अगर फ़िरऔ़न भूका होता तो कभी ख़ुदाई का दा'वा न करता और अगर क़ारून भूका होता तो कभी बग़ावत न करता ।"**[1] (मत़लब कि इन लोगों पर माल की फ़रावानी हुई तो सरकश हो गए)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई सिह़ह़त की ने'मत और दौलत की कसरत अक्सर मुब्तलाए मा'सियत कर देती है। लिहाज़ा जो ख़ूब जानदार या मालदार या साह़िबे इक़्तिदार हो उस को ख़ुदाए अ़लीमो ख़बीर عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बहुत ज़ियादा डरने की ज़रूरत है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में (रोज़ी में ख़ूब कसरत, फ़रमां बरदार औलाद की ने'मत, मालो दौलत, अच्छी सिह़ह़त, मन्सबे वजाहत, ओ़ह्दए वज़ारत या सदारत या हुकूमत वग़ैरा के ज़रीए) फ़राख़ी करे मगर उसे येह अन्देशा न हो कि कहीं येह (आसाइशें) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर तो नहीं ऐसा शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल है।"[2]

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से

हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

---

[1]......كشفُ المحجوب، ص ٣٩٠

[2]......تنبيه المغترين، ص ١٢٨

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से हमेशा डरना चाहिये और कोशिश करना चाहिये कि कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम से नाराज़ न हों क्यूं कि जिस को रिज़ाए रब्बुल अनाम का मुज़्दा मिल गया ख़ुदा की क़सम वोह दुन्या व आख़िरत में काम्याबी पा गया । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार अगर्चे उन लोगों में होता है जिन्हें सारी ज़िन्दगी **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा ह़ासिल रही मगर फिर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से कभी ग़ाफ़िल न हुए और हर वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र रब्बे जुल जलाल और उस के मह़बूबे बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे पायां इ़नायात पर रही । चुनान्चे,

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और कुछ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बारगाहे नुबुव्वत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीद से अपनी आंखों को ठन्डा कर रहे थे, शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दरियाए रह़मत जोश में आया और आप ने सब को अपनी करम नवाज़ियों से नवाज़ा मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ब ज़ाहिर कुछ भी अ़त़ा न फ़रमाया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

www.dawateislami.net

सरकारे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दूसरों पर करम देखा तो गोया दिल बुझ गया और बारगाहे नुबुव्वत से इजाज़त पा कर वापसी के लिये रवाना हुए तो खुद पर क़ाबू न रहा और बे इख़्तियार आंखें छलक पड़ीं, रास्ते में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हो गई, जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को यूं अश्कबार देख कर बे क़रार हो गए और पूछा : "मेरे भाई ! ख़ैरिय्यत तो है जो यूं अश्कों की बरसात से रास्तों को सैराब करते हुए जा रहे हैं ?" अ़र्ज़ की : "आज सरवरे कौनो मकां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी बारगाह में मौजूद तमाम लोगों को अपनी रह़मतों से नवाज़ा मगर मुझ पर करम की बारिश न हुई लगता है कि शायद हुज़ूर नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से ख़फ़ा हैं।"

सदा मीठी नज़र रखना अगर तुम हो गए नाराज़
क़सम रब की कहीं का न रहूंगा या रसूलल्लाह

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सारी कैफ़िय्यत बयान कर दी, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दीवाने की दीवानगी जान कर इर्शाद फ़रमाया कि : **"मैं उन से नाराज़ नहीं बल्कि मैं ने तो उन के ईमान को ही काफ़ी जानते हुए उन्हें उन के ईमान के सिपुर्द कर दिया था।"**[1]

---

[1] ......المصنف لعبد الرزاق، باب اصحاب النبی، الحدیث: ۲۰۵۷۸، ج ۱۰، ص ۲۲۵

www.dawateislami.net

येह वोही सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जिन को अपने आंसूओं पर इतना क़ाबू था कि किसी ने इन्हें अश्कबार न देखा। चुनान्चे,

आंखें नहीं, दिल रो रहा है

मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक शख़्स ने निहायत ही ख़ूब सूरत आवाज़ में क़ुरआने करीम की तिलावत की जो इस क़दर मु-तअस्सिर कुन थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा सब की आंखें अश्कबार हो गईं तो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''अ़ब्दुर्रह़मान की आंखें नहीं, दिल रो रहा है।''**[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के इस पुर बहार पहलू पर हज़ार जानें क़ुरबान ! आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم राज़ी हैं तो बारगाहे रिसालत में जब सब आंखें अश्कबार हुईं तो इन की आंखों से आंसूओं का एक क़त़रा तक न निकला लेकिन जब दिल में अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का ख़याल गुज़रा तो ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई गोया जिस्म से जान ही निकल गई हो और ख़ुद पर क़ाबू न पा सके, दिल में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का जोश मारता समुन्दर आंखों के ज़रीए आंसूओं की

[1]……حِلیۃُ الاولیاء، عَبدالرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۱۹، ج ۱ ص ۱۴۴

www.dawateislami.net

सूरत में उमंड आया ह़त्ता कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ैरान हो कर पूछते हैं : ऐ मेरे भाई ! क्या हुवा ? आप की आंखों से अश्कों की येह बरसात ! आख़िर ऐसी कौन सी परेशानी लाह़िक़ हो गई कि आज दरो दीवार ही नहीं शहरे मदीना के गली कूचे भी आप के अश्कों की गवाही दे रहे हैं ? سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़श्के मह़बूब से मा'मूर इस जुम्ले पर करोड़ों जानें क़ुरबान ! अ़र्ज़ की : **''लगता है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से नाराज़ हैं।''** सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان क्यूं न अपने मह़बूब की नाराज़ी को मह़सूस करते कि वोह तो हर दम मह़बूबे बारी तआ़ला की रिज़ा चाहते जैसा कि ख़ुद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रब عَزَّوَجَلَّ आप की रिज़ा चाहता। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت ने इस मफ़्हूम की क्या ख़ूब तरजुमानी फ़रमाई है :

ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम
ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुद पर क़ाबू न रहा क्यूं कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी रब की नाराज़ी है। पस अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गोया उन्हें यूं तसल्ली दी :

सुन्नतों के ऐ मुबल्लिग़ हो मुबारक तुझ को
तुझ से सरकार बड़ा प्यार किया करते हैं

www.dawateislami.net

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत के भी क़ुरबान ! कि फ़क़त़ ज़बानी तसल्ली को काफ़ी न समझा बल्कि ख़ुद बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तस्दीक़ करवाई कि हुज़ूर नाराज़ नहीं हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आप के ए'ज़ाज़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वालिहाना इ़श्क़ फ़रमाया करते थे, तो ख़ुद सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी इन्हें अपनी ख़ुसूसी शफ़्क़तों से नवाज़ते रहते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे पनाह मह़ब्बत की बिना पर बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कई बार आप को ऐसे ए'ज़ाज़ात से नवाज़ा गया जिन से बहुत कम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को नवाज़ा गया। चुनान्चे,

पहला ए'ज़ाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक मर्तबा दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जिहाद की तय्यारी करने का हुक्म दिया तो आप

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्दी जल्दी इ़मामा शरीफ़ पहन कर बारगाहे नाज़ में हाज़िर हो गए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिहाद पर रवाना करने से पहले नसीहतों के कुछ म-दनी फूल अ़ता फ़रमाने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने पास बुलाया, और अपने सामने क़दमों में बिठा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इ़मामा खोला, फिर ख़ुद अपने दस्ते अक़्दस से सियाह इ़मामा बांधा और इर्शाद फ़रमाया : **''ऐ इब्ने औ़फ़ ! इ़मामा ऐसे बांधा करो ।''**[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस करम नवाज़ी को अक्सर याद करते और तह्दीसे ने'मत के तौ़र पर इस का ज़िक्र भी फ़रमाया करते । चुनान्चे,

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से मेरे सर पर **इ़मामे का ताज** सजाया और (बांधते हुए) इस का शम्ला मेरे सीने और पीठ पर लटका दिया ।''[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ ख़ुद अपने सर पर इ़मामा शरीफ़ बांधना सुन्नत है इसी त़रह़ किसी दूसरे के सर पर इ़मामा शरीफ़ बांधना भी सुन्नत से साबित है ।

---

[1] ……کتاب المغازی، سریۃ امیر ھا عبد الرحمن بن عوف، ج ۲، ص ۵۶۰، ملتقطاً

[2] ……سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب في العمائم، الحدیث: ۴۰۷۹، ج ۴، ص ۷۷

www.dawateislami.net

"इमामा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से इमामा शरीफ़ के फ़ज़ाइल पर ﴾5﴿ अह़ादीसे मुबा-रका

﴾1﴿..... فَاِنَّ الْعِمَامَةَ سِيْمَاءُ الْاِسْلَامِ وَهِیَ حَاجِزَةٌ بَيْنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُشْرِكِيْنَ इमामा इस्लाम का शिआ़र है और येही इमामा मुस्लिमों और मुश्रिकों के माबैन फ़र्क़ करने वाला है।"[1]

﴾2﴿..... اِعْتَمُّوْا تَزْدَادُوْا حِلْمًا या'नी इमामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा।[2]

﴾3﴿..... इमामे की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : هٰكَذَا تَكُوْنُ تِيْجَانُ الْمَلٰئِكَة या'नी फ़िरिश्तो के ताज ऐसे होते हैं।[3]

﴾4﴿..... اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى اَكْرَمَ هٰذِهِ الْاُمَّةَ بِالْعَصَائِب या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत को इमामों से मुकर्रम फ़रमाया।[4]

﴾5﴿..... اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ وَمَلٰئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلٰى اَصْحَابِ الْعَمَائِمِ يَوْمَ الْجُمُعَة या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुआ़ के रोज़ इमामे वालों पर।[5]

इमामा शरीफ़ बांधने का त़रीक़ा ﴾1﴿..... दाईं त़रफ़ से शुरूअ़ करना

अपने सर पर इमामा बांधना हो या किसी दूसरे के सर

[1] .....کنز العمال، الحدیث: ۴۱۹۰۴، ج۸، الجزء ۱۵، ص ۲۰۵

[2] .....المعجم الکبیر، باب ماجاء فی لبس العمائم الخ، الحدیث: ۵۱۷، ج ۱، ص ۱۹۴

[3] .....کنز العمال، الحدیث: ۴۱۹۰۶، ج۸، الجزء ۱۵، ص ۲۰۵

[4] .....کنز العمال، الحدیث: ۴۱۱۳۷، الجزء ۱۵، ص ۱۳۵

[5] .....مجمع الزوائد، باب اللباس للجمعة، الحدیث: ۳۰۷۵، ج ۲، ص ۳۹۴

www.dawateislami.net

पर, इमामा बांधने में सुन्नत येह है कि इमामे का पहला **पेच** दाईं जानिब ले जाएं, फिर इसी तरतीब से मुकम्मल इमामा शरीफ़ बांधें क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर बात में दहनी त़रफ़ से इब्तिदा को पसन्द फ़रमाते । जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना **आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाईं त़रफ़ से इब्तिदा को पसन्द फ़रमाते थे, जब भी कोई शै लेते तो दाएं हाथ से लेते और जब किसी को कुछ अ़त़ा फ़रमाते तो दाएं हाथ से अ़त़ा फ़रमाते, अल ग़रज़ तमाम मुआ़-मलात में दाईं त़रफ़ से इब्तिदा को पसन्द फ़रमाते ।''[1]

﴾2﴿..... बीच सर पर इमामा होना

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्एे रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि इमामा शरीफ़ की बन्दिश गुम्बद नुमा हो जिस त़रह़ फ़क़ीर (या'नी आ'ला ह़ज़रत ख़ुद) बांधता है । बा'ज़ लोग इमामा इस त़रह़ बांधते हैं कि बीच में सर खुला रहता है, इसे **ए'तिजार** कहते हैं और **ए'तिजार** को उ़-लमाए किराम ने मक्रूह लिखा है ।[2] **सदरुश्शरीअ़ह** बहारे

[1] .....سنن النسائی، کتاب الزینۃ، باب التیامن فی الترجل، الحدیث: ۵۰۲۹، ص ۸۱۰

[2] .....फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 186

www.dawateislami.net

शरीअ़त में फ़रमाते हैं कि **ए'तिजार** या'नी पगड़ी इस त़रह़ बांधना कि बीच सर पर न हो, मक्रूहे तह़रीमी है, नमाज़ के इ़लावा भी इस त़रह़ इ़मामा बांधना मक्रूह है ।[1] और फ़तावा अम्जदिय्या में फ़रमाते हैं : लोग येह समझते हैं कि टोपी पहने रहने की ह़ालत में **ए'तिजार** होता है मगर तह़क़ीक़ येह है कि **ए'तिजार** इस सूरत में है कि इ़मामे के नीचे कोई चीज़ सर को छुपाने वाली न हो ।[2] **गुम्बद नुमा इ़मामा शरीफ़** बांधने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि पहला शम्ला सर के ऊपर से ले कर सीने पर डाल लें और फिर पहला **पेच** दाईं त़रफ़ को घुमाएं इस त़रह़ इ़मामा बांधते हुए आख़िरी शम्ला पीठ के पीछे डाल दें, अब सर के ऊपर से **इ़मामा शरीफ़** को थोड़ा सा ऊपर कर के खोल दें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ **गुम्बद नुमा इ़मामा शरीफ़** बांधने में आसानी होगी ।

﴿3﴾..... टोपी पर इ़मामा बांधना

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इ़मामा शरीफ़ टोपी पर बांधते थे, लिहाज़ा हमें भी टोपी पर इ़मामा बांधना चाहिये अगर्चे बिग़ैर टोपी भी इ़मामा बांधने से मुत़्लक़न फ़ज़ीलत ह़ासिल हो जाएगी मगर टोपी पर बांधना अफ़्ज़ल है । जैसा कि आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या**, जिल्द 6,

[1]..... बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 626
[2]..... फ़तावा अम्जदिय्या, किताबुस्सौम, जि. 1, स. 399

www.dawateislami.net

सफ़हा 209 पर अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : ''इ़मामे से मु-तअ़ल्लिक़ा तमाम रिवायात से इ़मामे की फ़ज़ीलत मुत्लक़न साबित हुई अगर्चे बिग़ैर टोपी के हो, हां **टोपी के साथ इ़मामा बांधना अफ़्ज़ल है ।**''

﴾4﴿..... इ़मामा खड़े हो कर बांधना

बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम, ह़िस्सा 16, स. 660 पर है : ''इ़मामा खड़े हो कर बांधे और पाजामा बैठ कर पहने । जिस ने इस का उलटा किया वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं ।''[1]

﴾5﴿..... इ़मामा शरीफ़ की लम्बाई

इ़मामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम हो न छ[6] गज़ से ज़ियादा । उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : ''**इ़मामा कम अज़ कम पांच हाथ हो और ज़ियादा से ज़ियादा बारह हाथ ।**'' इ़मामे शरीफ़ की लम्बाई का अम्र आ़दत पर है जहां उ़-लमा व अ़वाम की जैसी आ़दत हो और इस में कोई मानेए़ शर-ई न हो इतना ही रखें । क्यूं कि उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : ''मुआ़-शरे की आ़दत से बाहर होना मक्रूह है ।''[2]

﴾6﴿..... शम्ले की मिक़्दार

इ़मामे के एक या दो शम्ले छोड़ना, दोनों सुन्नत है मगर

---

[1]..... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, जि. 3, स. 660

[2]..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, 171

www.dawateislami.net

शम्ला एक बालिश्त से कम नहीं होना चाहिये, शम्ले की अक़्ल मिक़्दार चार उंगल है और ज़ियादा से ज़ियादा एक हाथ और बा'ज़ ने नशिस्त गाह तक रुख़्सत दी या'नी इस क़दर कि बैठने में न दबे और ज़ियादा राजेह़ येही है कि निस्फ़ पुश्त से ज़ियादा न हो जिस की मिक़्दार तक़्रीबन वोही एक हाथ है। ह़द से ज़ियादा लम्बा शम्ला रखना इसराफ़ है और ब निय्यते तकब्बुर हो तो ह़राम, यूंही निशस्त गाह से भी नीचा म-सलन रानों या ज़ानों तक लम्बा शम्ला रखना भी सख़्त मम्नूअ़ है।[1] **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक इ़मामे का शम्ला उ़मूमन पुश्त (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था, कभी सीधी जानिब और कभी दोनों कन्धों के दरमियान दो शम्ले होते। उलटी जानिब शम्ले का लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है।[2]

सब्ज़ इ़मामे की क्या बात है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 40 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"163 म-दनी फूल"** सफ़ह़ा 27 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रत अ़ल्लामा शैख़ **अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

---

[1]..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 182

[2]..... اشعۃ اللمعات، ج۳، ص۵۸۳

www.dawateislami.net

''नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इ़मामा शरीफ़ अक्सर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी सब्ज़ होता था।''[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब्ज़ रंग का इ़मामा शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, **रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे अन्वर पर सजाया है, ''**दा'वते इस्लामी**'' ने **सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे** को अपना **शिआ़र** बनाया है, सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे की भी क्या बात है, मेरे मक्की म-दनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर बना हुवा जगमग जगमग करता **गुम्बद शरीफ़** भी सब्ज़ सब्ज़ है! **आ़शिक़ाने रसूल** को चाहिये कि **सब्ज़ सब्ज़ रंग के इ़मामे** से हर वक़्त अपने सर को सर सब्ज़ रखें और सब्ज़ रंग भी गहरा होने के बजाए ऐसा **प्यारा प्यारा और निखरा निखरा सब्ज़** हो कि दूर दूर से बल्कि रात के अंधेरे में भी **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** के सब्ज़ सब्ज़ जल्वों के तुफ़ैल जग-मगाता नूर बरसाता नज़र आए।

नहीं है चान्द सूरज की मदीने को कोई ह़ाजत
वहां दिन रात उन का सब्ज़ गुम्बद जग-मगाता है

दस्तार बन्दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन के सर पर ख़ुद दो आ़लम के मालिको

[1] .....کشف الالتباس فی استحباب اللباس، ص۳۸

www.dawateislami.net

मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इ़मामा शरीफ़ बांधा, आज कल **''दीनी जामिआ़त''** में एक मख़्सूस तक़्रीब का एहतिमाम किया जाता है जिस में **फ़ारिग़ुत्तह़्सील त़-लबा** के सरों पर कोई बुज़ुर्ग इ़मामा बांधते हैं जैसा कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** के तह़्त **''जामिआ़तुल मदीना''** से फ़ारिग़ुत्तह़्सील होने वाले **म-दनी इस्लामी भाइयों** के सरों पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने मुबारक हाथों से इ़मामा शरीफ़ सजाते हैं, इस की अस्ल भी येही ह़दीसे मुबा-रका है चुनान्चे,

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इसी ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि : **''आज कल फ़ारिग़ुत्तह़्सील त़-लबा के सरों पर उ़-लमा इमामे लपेटते हैं जिसे रस्मे दस्तार बन्दी कहा जाता है। इस की अस्ल येह ह़दीस है।''**[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दूसरा ए'ज़ाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शो'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ग़ज़्वए तबूक से वापसी पर[2] एक जगह **शहन्शाहे मदीना,**

[1]..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 501

[2]..... الطبقات الکبریٰ لابن سعد، عبد الرحمن بن عوف، ج ۳، ص ۹۵

www.dawateislami.net

क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इक़्तिदा में नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमा रहे थे, एक रक्अ़त मुकम्मल हो चुकी थी, जब ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजू-दगी को मह़सूस किया तो पीछे हटने लगे लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशारे से मन्अ़ फ़रमा दिया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ जारी रखी और दूसरी रक्अ़त मुकम्मल कर के सलाम फैर दिया, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और अपनी नमाज़ को मुकम्मल फ़रमाया ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सा'द बिन मुनीअ़ अबू **अ़ब्दुल्लाह** बसरी (मु-तवफ़्फ़ा 230 सि.हि.) फ़रमाते हैं कि जब मैं ने येह ह़दीसे मुबा-रका ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन उ़मर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पेश की तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस की तस्दीक़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया : जब ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इक़्तिदा में नमाज़ अदा फ़रमाई तो सलाम के बा'द इर्शाद फ़रमाया : **''हर नबी ने दुन्या से पर्दा फ़रमाने से क़ब्ल अपने किसी नेक उम्मती के पीछे नमाज़ ज़रूर अदा फ़रमाई है ।''**[2]

---

[1]……صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب المسح علی الناصیۃ والعمامۃ، الحدیث: ۲۷۴، ص ۱۶۰

[2]……الطبقات الکبریٰ لابن سعد، عبد الرحمن بن عوف، ج ۳، ص ۹۵

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि इस से **चन्द मसाइल** मा'लूम हुए :

एक येह कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ऐ़न नमाज़ की ह़ालत में हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आहट का ख़याल रखते थे।

दूसरे येह कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان नमाज़ में हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अदब करते थे जिस से इन की नमाज़ नाक़िस न होती बल्कि कामिल तर हो जाती थी।

तीसरे येह कि अगर ऐ़न जमाअ़ते नमाज़ की ह़ालत में हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले आएं तो मौजूदा इमाम की इमामत मन्सूख़ हो गई और उस वक़्त से हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही इमाम होंगे वरना ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पीछे हटने की कोशिश न करते।

चौथे येह कि उस इमाम को अगर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इमामत का हुक्म दें तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाइब हो कर इमामत करेगा।

पांचवीं येह कि अफ़्ज़ल की नमाज़ मफ़्ज़ूल के पीछे जाइज़ है।[1]

तीसरा ए'ज़ाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक अच्छे हम-नशीन और

[1]..... मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 1, स. 336

www.dawateislami.net

दोस्त का होना भी बहुत बड़े ए'ज़ाज़ की बात है, आज दुन्यावी त़ौर पर किसी का कोई अच्छा दोस्त हो तो वोह इस पर फ़ख़्र महसूस करता है लेकिन क़ुरबान जाइये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़िस्मत पर कि ख़ुद **रसूलुल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इन्हें अपने दोस्त होने का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया। चुनान्चे मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : ''**اَنْتَ وَلِیِّی فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَۃِ**'' या'नी ऐ अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़! तुम दुन्या व आख़िरत में मेरे दोस्त हो।''[1]

इ़ल्मी मक़ाम व मर्तबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहां दुन्यावी मालो मताअ़ से नवाज़ा था वहीं आप की इ़ल्मी बसीरत भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में मुमताज़ थी और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मसाइले शरइ़य्या में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशा-वरत फ़रमाया करते थे।

दौरे रिसालत के मुफ़्ती

अ़हदे रिसालत में आ़म त़ौर पर किसी को कोई मस्अला दरपेश होता तो वोह मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

[1] .....صحیح مسلم بشرح النووی، ج ۲، الجزء الثالث، ص ۱۷۲

www.dawateislami.net

बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त कर लेता जो बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर न हो सकता वोह उन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से शर-ई रहनुमाई ह़ासिल कर लेता जिन्हें सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इ़ल्मी वजाहत की बिना पर इस काम की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा रखी थी। चुनान्चे,

इमाम अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अबुल फ़ज़्ल अ़स्क़लानी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि **"ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन ज़ी वक़ार शख़्सिय्यात में होता है जो सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में फ़तवा दिया करते थे।"**[1]

बहुत से सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और बिल ख़ुसूस अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ल्मी जलालत की वज्ह से आप से मसाइले शरइ़य्या में मुशा-वरत फ़रमाते और अक्सर आप की राय को तरजीह़ देते। चुनान्चे,

शराब की ह़द जारी करने में इज्तिहाद

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शराब नोशी पर दरख़्त की शाख़ और जूतों से मारा, फिर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

[1] .....الریاض النضرۃ، ج۲، ص۳۰۷

www.dawateislami.net

चालीस कोड़े मारे, फिर जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में लोग सब्ज़ा ज़ारों और दीहातों के क़रीब रहने लगे (और शराब के मुआ़-मले में बेबाक हो गए) तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से शराब नोशी की ह़द के बारे में मश्वरा त़लब किया कि तुम्हारी क्या राय है ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मेरी राय येह है कि ह़ुदूद में जो सब से कम ह़द है (या'नी 80 कोड़े) इसे इख़्तियार फ़रमाएं।" लिहाज़ा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येही ह़द (या'नी अस्सी कोड़े) मुक़र्रर फ़रमा दी ।[1]

ह़द किसे कहते हैं ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 369 पर **सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**ह़द** एक क़िस्म की सज़ा है जिस की मिक़्दार शरीअ़त की जानिब से मुक़र्रर है कि इस में कमी बेशी नहीं हो सकती इस से मक़्सूद लोगों को ऐसे काम से बाज़ रखना है जिस की येह सज़ा है और जिस पर ह़द क़ाइम की गई वोह जब तक तौबा न करे मह़्ज़ ह़द क़ाइम करने से पाक न होगा।"[2]

1 ......الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، عبد الرحمن بن عوف، ج ۴، ص ۲۹۱

2 ...... बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 369

www.dawateislami.net

हुदूदे ह़रम में शिकार के मु-तअ़ल्लिक़ इज्तिहाद

एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुदूदे ह़रम में हरन के शिकार के मु-तअ़ल्लिक़ किसी ने सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने पहलू में बैठे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशा-वरत कर के एक बकरी के कफ़्फ़ारे का हुक्म इर्शाद फ़रमाया ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मोह़रिम या'नी जो ह़ालते एह़राम में हो उस के लिये हुदूदे ह़रम में शिकार करना जुर्म है और अगर किसी **मोह़रिम** से येह जुर्म सादिर हो जाए तो उसे इस का कफ़्फ़ारा अदा करना होगा ।

ता'दादे रक्अ़ात में शक

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! क्या तुम ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस मस्अले के बारे में कुछ सुना है कि **''जब नमाज़ी को ता'दादे रक्अ़ात में शक हो जाए तो वोह क्या करे ?''** तो ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नफ़ी में जवाब दिया । इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए तो

[1] .....المعجم الکبیر، الرقم نسبۃ عبدالرحمن بن عوف، الحدیث: ۲۵۸، ج ۱، ص ۱۲۷ ملتقطاً

www.dawateislami.net

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येही सुवाल उन से दोहराया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : जी हां ! बिल्कुल मेरे पास इस का जवाब है। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया ! हां वाक़ेई । चलो जल्दी बताओ कि **बेशक आप हम में इन्साफ़ पसन्द और क़ाबिले ए'तिमाद हैं** तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़दीसे पाक बयान की, कि "जब तुम में से किसी को ता'दादे रक्अ़ात में शक हो जाए कि दो हुई या एक ? तो वोह एक शुमार करे, यूं ही दूसरी, तीसरी में शक हो जाए तो दूसरी। या तीसरी और चौथी में शक हो जाए तो तीसरी गुमान करे । मत़लब येह कि जब भी ज़ियादती में गुमान हो तो एक कम शुमार करे और फिर बक़िय्या रक्अ़ात मुकम्मल कर के आख़िर में सज्दए सह्व कर ले ।"[1]

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 718 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस को शुमारे रक्अ़त में शक हो, म-सलन तीन हुई या चार और बुलूग़ के बा'द येह पहला वाक़िआ़ है तो सलाम फैर कर या कोई अ़मल मुनाफ़िये नमाज़ कर के तोड़ दे या ग़ालिब गुमान के ब मूजिब पढ़ ले मगर

[1] ......السنن الکبرٰی للبیھقی، کتاب الصلوۃ، باب من شک فی صلوتہ، الحدیث: ۳۸۰۴، ج ۲، ص ۴۶۹

www.dawateislami.net

बहर सूरत उस नमाज़ को सिरे से पढ़े महूज़ तोड़ने की निय्यत काफ़ी नहीं और अगर येह शक पहली बार नहीं बल्कि पेश्तर भी हो चुका है तो अगर ग़ालिब गुमान किसी त़रफ़ हो तो इस पर अ़मल करे वरना कम की जानिब को इख़्तियार करे या'नी तीन और चार में शक हो तो तीन क़रार दे, दो और तीन में शक हो तो दो, **وعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس** और तीसरी चौथी दोनों में क़ा'दा करे कि तीसरी रक्अ़त का चौथी होना मोहूतमल है और चौथी में क़ा'दा के बा'द सज्दए सह्व कर के सलाम फैरे और गुमाने ग़ालिब की सूरत में सज्दए सहव नहीं मगर जब कि सोचने में ब क़दरे एक रुक्न के वक़्फ़ा किया हो तो सज्दए सह्व वाजिब हो गया।[1]

उम्मत के मोह़सिन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सीरते करीमा उठा कर देखें मा'लूम होता है कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत से अ़त़ा होने वाले अह़ादीसे मुबा-रका के अ़ज़ीम ख़ज़ाने को उम्मत तक पहुंचाने के लिये अपने शबो रोज़ सर्फ़ कर दिये। जब किसी मस्अले में हमें शर-ई रहनुमाई दरकार होती है और वहां कोई ह़दीसे मुबा-रका हमें सहारा देती है तो बे साख़्ता उस के रावी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दिल में तशक्कुर के जज़्बात उभर आते हैं और दुआ़इय्या कलिमात ज़बान पर कुछ यूं जारी हो जाते हैं : **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें हमेशा तरो ताज़ा रखे।''** ह़ज़रते

[1]..... बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 718

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस ह़वाले से उम्मत पर बहुत बड़ा एह़सान है कि कई अह़ादीसे मुबा-रका आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए़ इस उम्मत तक पहुंची हैं। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी चार अह़ादीस मुला-ह़ज़ा कीजिये :

﴾1﴿..... त़ाऊ़न ज़दा अ़लाक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''जब किसी अ़लाक़े में (त़ाऊ़न की) वबा आ जाए तो वहां न जाओ और अगर तुम पहले से वहां मौजूद हो तो अब वहां से मत निकलो।''**[1]

त़ाऊ़न क्या है ?

त़ाऊ़न एक वबाई मरज़ है जिस की वज़ाह़त अह़ादीसे मुबा-रका में मौजूद है, चुनान्चे त़ाऊ़न से मु-तअ़ल्लिक़ चार अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा कीजिये :

﴾1﴿.... **त़ाऊ़न एक अ़ज़ाब था, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस पर चाहता भेजता लेकिन इस उम्मत के लिये इसे **रह़मत** फ़रमा दिया है।[2]

﴾2﴿.... मेरी उम्मत का ख़ातिमा दुश्मन के नेज़ों और **त़ाऊ़न** से ही होगा, **त़ाऊ़न ऊंट की गिल्टी की त़रह़ है।**[3]

---

[1] .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۱۶۶۶، ج ۱، ص ۴۰۷

[2] .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشہ رضی اللہ عنہا، الحدیث: ۲۶۱۹۹، ج ۱۰، ص ۱۰۳

[3] .....المرجع السابق، الحدیث: ۲۶۲۴۲، ج ۱۰، ص ۱۱۰

www.dawateislami.net

﴿3﴾.... त़ाऊ़न तुम्हारे दुश्मन **जिन्नों का कूंचा है ऊंट के ग़ुदूद की त़रह़ गिल्टी है कि बग़लों और नर्म जगहों में निकलती है ।**[1]

﴿4﴾.... **त़ाऊ़न एक कूंचा है** कि मेरी उम्मत को उन के दुश्मन जिन्नों की त़रफ़ से पहुंचेगा जैसे **ऊंट की गिल्टी ।**[2]

त़ाऊन से मरने वाला शहीद है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मु-तवातिरा से साबित है कि त़ाऊ़न से मरने वाला शहीद है, चुनान्चे इस ज़िम्न में पांच अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा कीजिये :

﴿1﴾.... اَلطَّاعُوْنُ شَهَادَةٌ لِكُلِّ مُسْلِمٍ या'नी त़ाऊ़न हर मुसल्मान के लिये शहादत है ।[3]

﴿2﴾.... مَنْ مَاتَ فِی الطَّاعُوْنَ فَهُوَ شَهِيْدٌ या'नी त़ाऊ़न में मरने वाला शहीद है ।[4]

﴿3﴾.... اَلطَّاعُوْنُ شَهَادَةٌ لِاُمَّتِی या'नी त़ाऊ़न मेरी उम्मत के लिये शहादत है ।[5]

﴿4﴾.... اَلطَّاعُوْنُ شَهَادَةٌ या'नी त़ाऊ़न शहादत है ।[6]

﴿5﴾.... اَلطَّاعُوْنُ شَهَادَةٌ لِاُمَّتِیْ وَرَحْمَةٌ لَهُمْ وَرِجْسٌ عَلَى الْكَافِرِيْنَ

---

[1] .....المعجم الاوسط، الحدیث: ۵۵۳۱، ج۴، ص۱۵۰

[2] .....مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب فی الطاعون والثابت، الحدیث: ۳۸۶۸، ج۳، ص۵۱

[3] .....صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب الشهادة سبع، الحدیث: ۲۸۳۰، ج۲، ص۲۶۳

[4] .....صحیح مسلم، کتاب الامارة، باب بیان الشهداء، الحدیث: ۱۹۱۴، ص۱۰۶۰

[5] .....المعجم الاوسط، الحدیث: ۵۵۳۱، ج۴، ص۱۵۰

[6] .....المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۱۷۸۱۲، ج۶، ص۲۳۸

www.dawateislami.net

या'नी त़ाऊ़न मेरी उम्मत के लिये शहादत और रह़मत है और काफ़िरों पर अ़ज़ाब है।[1]

त़ाऊ़न से भागना गुनाह मम्नूअ़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! त़ाऊ़न की वज्ह से त़ाऊ़न ज़दा अ़लाक़ा छोड़ कर भाग जाने की सख़्ती से मुमा-न-अ़त है और येह गुनाहे कबीरा है, क्यूं कि येह तक़्दीरे इलाही से भागना है, बल्कि ऐसे शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबा-रका में निहायत ही सख़्त हुक्म है, जिस त़रह़ त़ाऊ़न से भागना गुनाह है इसी त़रह़ वहां जाना भी ना जाइज़ व गुनाह है कि इस में बलाए इलाही से मुक़ाबला करना है।[2] चुनान्चे बहारे शरीअ़त में है : त़ाऊ़न जहां हो वहां से भागना जाइज़ नहीं और दूसरी जगह से वहां जाना भी न चाहिये। इस का मत़लब येह है कि जो लोग कमज़ोर ए'तिक़ाद के हों और ऐसी जगह गए और मुब्तला हो गए, उन के दिल में बात आई कि यहां आने से ऐसा हुवा न आते तो काहे को इस बला में पड़ते और भागने में बच गया, तो येह ख़याल किया कि वहां होता तो न बचता भागने की वज्ह से बचा ऐसी सूरत में भागना और जाना दोनों मम्नूअ़। त़ाऊ़न के ज़माने में अ़वाम से अक्सर इसी क़िस्म की बातें सुनने में आती हैं और अगर इस का अ़क़ीदा पक्का

---

[1] .....کنز العمال، کتاب الطب والترقی، الحدیث: ۲۸۴۲۷، ج ۵، الجزء العاشر، ص ۳۱

[2] ..... त़ाऊ़न के मु-तअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द 24, सफ़ह़ा 204 का मुत़ा-लआ़ मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

है जानता है कि जो कुछ मुक़द्दर में होता है वोही होता है, न वहां जाने से कुछ होता है न भागने में फ़ाएदा पहुंचता है तो ऐसे को वहां जाना भी जाइज़ है, निकलने में भी ह़रज नहीं कि इस को भागना नहीं कहा जाएगा और ह़दीस में मुत़्लक़न निकलने की मुमा-न-अ़त नहीं बल्कि भागने की मुमा-न-अ़त है।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿2﴾..... अबू जह्ल की हलाकत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, "**अबू जह्ल की मौत**" सफ़ह़ा 2 ता 9 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **अबू जह्ल** की मौत का आंखों देखा वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बानी कुछ यूं नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : बद्र के रोज़ जब मैं मुजाहिदीन की सफ़ में खड़ा था, मैं ने अपने इर्द गिर्द दो नौ उ़म्र अन्सारी लड़के देखे। इतने में एक ने आहिस्ता से मुझ से कहा : **یاعَمِّ! ھَلْ تَعْرِفُ اَبَاجَھْل؟** **चचाजान !** क्या आप **अबू जह्ल** को पहचानते हैं ? मैं ने जवाब दिया : पहचानता तो हूं मगर तुम्हें उस से क्या काम है ? उस ने कहा : मुझे

[1]..... बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 658

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा है वोह **गुस्ताख़े रसूल** है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं उस को देख लूं तो उस पर टूट पड़ूं या तो उस को मार डालूं या ख़ुद मर जाऊं। उस के साथ वाले लड़के ने भी मुझ से इसी त़रह़ की गुफ़्त-गू की। किसी शाइ़र ने उन दोनों बच्चों के जज़्बात की यूं अ़क्कासी की :

क़सम खाई है मर जाएंगे या मारेंगे नारी को

सुना है गालियां देता है येह मह़बूबे बारी को

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : अचानक मैं ने देखा कि **अबू जह्ल** अपने डरपोक सिपाहियों के दरमियान गश्त कर के उन को उक्साने के लिये येह **रज्ज़** पढ़ रहा है :

مَاتَنْقِمُ الْحَرْبُ الْعَوَانُ مِنِّی　　بَازِلُ عَامَیْنِ حَدِیْثُ سِنِّیْ

لِمِثْلِ هٰذَا وَلَدَتْنِیْ اُمِّیْ

या 'नी येह शदीद जंग मुझ से क्या इन्तिक़ाम ले सकती है ? मैं तो नौ जवान त़ाक़त वर ऊंट हूं जो अपने उ़न्फ़ुवाने शबाब (या 'नी भरपूर जवानी) में है, मेरी मां ने मुझे ऐसी जंगों ही के लिये जना है।''

मैं ने उन लड़कों को **अबू जह्ल** की त़रफ़ इशारा कर दिया। वोह तलवारें लहराते हुए उ़क़ाबों की त़रह़ झपटे और उस पर टूट पड़े, वोह ज़ख़्मी हो कर बे ह़िसो ह़-र-कत ज़मीन पर गिर पड़ा । दोनों अपने प्यारे और मीठे मीठे आक़ा

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने **अबू जह्ल** को ठिकाने लगा दिया है। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम में से किस ने उसे क़त्ल किया है ? दोनों ही कहने लगे : ''मैं ने।'' शहन्शाहे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : जिन तलवारों से तुम ने उसे क़त्ल किया है उन्हें कपड़े से साफ़ तो नहीं कर दिया ? अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन तलवारों को मुला-ह़ज़ा फ़रमाया, वोह दोनों ख़ून से रंगीन थीं। फ़रमाया : ''**كِلَاكُمَا قَتَلَهٗ**'' या'नी तुम दोनों ने उसे क़त्ल किया है।[1]

दोनों मुन्नों का भी ह़म्ला ख़ूब था बू जह्ल पर
बद्र के उन दोनों नन्हे जां निसारों को सलाम

येह म-दनी मुन्ने कौन थे ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इन म-दनी मुन्नों का तआ़रुफ़ कराते हुए नक़्ल फ़रमाते हैं कि येह इस्लाम के शाहीन सिफ़त नन्हे मुजाहिदीन जिन्हों ने लश्करे क़ुरैश के सिपह सालार, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मन और इस उम्मत के संगदिल व सरकश फ़िरऔ़न **अबू जह्ल** को मौत के घाट उतारा उन के अस्माए गिरामी **मुआ़ज़ और मुअ़व्वज़**

[1] .....صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب من لم یخمس الأسلاب .....الخ، الحدیث: ۳۱۴۱، ج۲، ص۳۵۶ .....و.....سیرتِ ابنِ ہشام، ج۱، ص۵۹۱

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं। येह दोनों म-दनी मुन्ने सगे भाई थे, इन के इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सद हज़ार तह़सीनो आफ़रीन और इन के वल्वलए जिहाद पर लाखों सलाम कि इस लड़क पन और खेलने कूदने के अय्याम में ही इन्हों ने अपनी ज़िन्दगियों को म-दनी रंग में रंग लिया और राहे ख़ुदा में सफ़र कर के लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालार **अबू जह्ल** जफ़ाकार से टक्कर ले ली और उस को ख़ाको ख़ून में लौटता कर दिया।

लटक्ता हुवा बाज़ू

एक रिवायत के मुत़ाबिक़ इन दोनों भाइयों में से ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है : मैं अपनी तलवार लहराता हुवा **अबू जह्ल** पर टूट पड़ा मेरे पहले वार से उस की टांग की पिंडली कट कर दूर जा गिरी। उस के बेटे **इक्रिमा** (जो बा'द में मुसल्मान हुए) ने मेरी गरदन पर तलवार का वार किया मगर उस से मेरा बाज़ू कट गया और खाल के एक तस्मे के साथ लटक्ने लगा। सारा दिन **लटक्ते हुए बाज़ू** को संभाले दूसरे हाथ से मैं दुश्मन पर तलवार चलाता रहा। **लटक्ता हुवा बाज़ू** लड़ने में रुकावट बन रहा था लिहाज़ा मैं ने उसे पाउं के नीचे दबा कर खींचा जिस से जिल्द का तस्मा टूट गया और मैं उस से आज़ाद हो कर फिर कुफ़्फ़ार के साथ मसरूफ़े पैकार हो गया। **मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़ख़्म ठीक हो गया और येह ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहे।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते क़ाज़ी इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते इब्ने वह्ब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد से रिवायत की है कि जंग के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना कटा हुवा बाज़ू ले कर बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए। त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **लुआ़बे दहन** लगा कर वोह कटा हुवा बाज़ू फिर कन्धे के साथ जोड़ दिया।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿3﴾.... सिलए रेह़मी करो, क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी से बचो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़दीसे क़ुदसी रिवायत करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : मैं **अल्लाह** हूं, मैं **रह़मान** हूं और मैं ने **रेह़म** (या'नी रिश्ता) को पैदा किया और इस का नाम अपने नाम से मुश्तक़ किया पस जो इसे मिलाएगा मैं उसे मिलाए रखूंगा और जो इस को क़त़्अ़ करेगा (या'नी काटेगा) मैं उस से क़त़्अ़ करूंगा।[2]

सिलए रेह़मी क्या है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 558 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद

[1] .....مدارج النبوۃ، ج ۲، ص ۸۷

[2] ..... سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی قطعیۃ الرحم، الحدیث: ۱۹۱۴، ج ۳، ص ۳۶۳

www.dawateislami.net

अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **सिलए रेह़मी** के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं : "**सिलए रेह़म** के मा'ना रिश्ते को जोड़ना है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना। सारी उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि सिलए रेह़म वाजिब है और क़त्ए़ रेह़म ह़राम है, जिन रिश्ते वालों के साथ सिलह वाजिब है वोह कौन हैं ? बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : वोह ज़ू रेह़म मह़रम हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया : इस से मुराद ज़ू रेह़म हैं, मह़रम हों या न हों। और ज़ाहिर येही क़ौले दुवुम है अह़ादीस में मुत्लक़न रिश्ते वालों के साथ सिलह करने का हुक्म आता है। क़ुरआने मजीद में मुत्लक़न "ذَوِی الْقُرْبٰی" फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूरी है कि रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़ द-रजात हैं सिलए रेह़म के द-रजात में भी तफ़ावुत होता है। वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेह़म मह़रम का, इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब।"

﴾4﴿..... आ़लिम की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर सत्तर द-रजे बढ़ कर है और इन (सत्तर द-रजों में) हर दो द-रजों के दरमियान ज़मीनो आस्मान के फ़ासिले जितना फ़ासिला है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़-लमा को **अल्लाह**

[1] ……کنز العمال، کتاب العلم، الحدیث: ۲۸۷۹۲، ج ۵، الجزء العاشر، ص ۶۷

www.dawateislami.net

तआ़ला ने किस क़दर बुज़ुर्गी और मर्तबा अ़ता फ़रमाया है इस का मुकम्मल तौ़र पर बयान करना तो बहुत मुश्किल है अलबत्ता इन की फ़ज़ीलतो अ़-ज़मत की एक अ़ज़ीम झलक येह है कि क़ियामत के दिन जब आ़म लोगों को तो हिसाबो किताब के लिये रोका हुवा होगा लेकिन उ़-लमा को लोगों की शफ़ाअ़त के लिये रोका होगा, बहर हाल उ़-लमा का वुजूद दीनो दुन्या की सआ़दतों और ख़ूबियों का जामेअ़ है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दीनी फ़हमो फ़िरासत मअ़ हिक्मतो दानाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला ने **हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जहां दीनी **फ़हमो फ़िरासत** से नवाज़ा वहीं हिक्मतो दानाई से भी सरफ़राज़ फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में एक नुमायां मक़ाम रखते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का मुआ़-मला जिस ख़ुश उस्लूबी से तै़ फ़रमाया, बेशक वोह ज़कावत व दानाई पर दलालत करने के साथ साथ आप की करामत का बय्यन सबूत भी है। चुनान्चे,

हिक्मतो दानाई से भरपूर फ़ैसला

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब वक़्ते वफ़ात छ[6] **जन्नती सहाबा** हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने

www.dawateislami.net

ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़वाम, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया : ''मैं इन चन्द ह़ज़रात के सिवा और किसी को ख़िलाफ़त का अह्ल नहीं पाता क्यूं कि जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन से राज़ी थे। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल व तदफ़ीन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : छ[6] आदमियों की येह जमाअ़त ईसार से काम ले और तीन आदमियों के ह़क़ में अपने अपने ह़क़ से दस्त बरदार हो जाए।'' येह सुन कर ह़ज़रते सय्यदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में दस्त बरदार होता हूं।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में कनारा कश हो गए। आख़िर में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना ह़क़ दे दिया।'' अब सिर्फ़ तीन ह़ज़रात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم रह गए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

ने ख़िलाफ़त से दस्त बरदार होते हुए बाक़ी दो से फ़रमाया कि अब तुम दोनों रह गए हो। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से फ़रमाया : ''क्या आप दोनों इन्तिख़ाब का मुआ़-मला मेरे सिपुर्द करने के लिये तय्यार हैं ?'' ख़ुदा की क़सम ! मैं कभी अफ़्ज़ल से उ़दूल नहीं करूंगा।'' दोनों ह़ज़रात ने इस्बात में जवाब दिया तो आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का हाथ पकड़ा और कहा : ''आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़राबत दार और इस्लाम लाने में पहल करने वाले हैं, जैसा कि आप ख़ुद भी जानते हैं ख़ुदा की क़सम ! अगर मैं ख़िलाफ़त का फ़ैसला आप के ह़क़ में करूं तो आप पर इन्साफ़ करना लाज़िम होगा और अगर मैं ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मु-तअ़ल्लिक़ फ़ैसला करूं तो इन की इ़त़ाअ़त करना आप के लिये ज़रूरी होगा।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ा और इसी त़रह़ कहा। जब दोनों ह़ज़रात से पक्का वा'दा ले लिया तो कहा : ''ऐ उ़स्मान ! अपना हाथ उठाओ।'' और फिर उन से बैअ़त कर ली, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने भी बैअ़त की और फिर सब लोग टूट पड़े और तमाम लोगों ने आप की बैअ़त की।[1]

---

[1]……صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، قصة بیعة والاتفاق علی عثمان بن عفان، الحدیث: ۳۷۰۰، ج ۲، ص ۵۳۳

www.dawateislami.net

इस त़रह़ ख़िलाफ़त का मस्अला बिग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार के त़ै हो गया जो बिला शुबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़कावत व दानाई पर दलालत करने के साथ साथ आप की करामत का बय्यन सुबूत भी है।

फ़ैसला करना निहायत दुश्वार अम्र है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन चन्द फ़रीक़ों के माबैन किसी बात में फ़ैसला करना एक निहायत ही दुश्वार अम्र है, ख़ुसूसन जब किसी शख़्स को उन के माबैन **ह़कम** या'नी फ़ैसले करने वाला मुक़र्रर कर दिया जाए या उसे निगरान बना दिया जाए। निगरान से मुराद सिर्फ़ किसी मुल्क या शह्र या मज़्हबी व समाजी व सियासी तन्ज़ीम का ज़िम्मेदार ही नहीं बल्कि हर वोह शख़्स मुराद है जो किसी न किसी का ज़िम्मेदार हो म-सलन : **मुल्क** का बादशाह अपनी रिआ़या, मराक़िब (या'नी सुपर वाइज़र) अपने मा तह़्त मज़दूरों का, अफ़्सर अपने क्लर्कों का, अमीरे क़ाफ़िला अपने शु-रकाए क़ाफ़िला का, इसी त़रह़ ज़ैली मुशा-वरत का निगरान अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों का, वालिद अपनी औलाद का, उस्ताद अपने शागिर्द का और शोहर अपनी बीवी का ज़िम्मेदार है। जैसा कि मरवी है कि "كُلُّكُمْ رَاعٍ وَ كُلُّكُمْ مَسْؤُلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ" या'नी तुम सब निगरान हो और तुम में से हर एक से उस के मा तह़्त अफ़राद के बारे में पूछा जाएगा।"[1]

[1]……صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب قول اللہ……الخ، الحدیث: ۷۱۳۸، ج۴، ص۴۵۳

www.dawateislami.net

फ़ैसला करना ह़स्सास ज़िम्मेदारी है

यक़ीनन ओ़ह्दए क़ज़ा, हुक्मरानी या निगरानी की ज़िम्मेदारी बहुत ह़स्सास ज़िम्मेदारी है, जिस शख़्स को येह ज़िम्मेदारी सोंपी गई यक़ीनन वोह बड़ी आज़्माइश में मुब्तला हो गया, चुनान्चे इस ज़िम्न में तीन अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं :

﴾1﴿....जिस शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी रिआ़या का निगरान बनाया फिर उस ने उन की ख़ैर ख़्वाही का ख़याल न रखा उस पर जन्नत को ह़राम कर देगा।[1]

﴾2﴿....जो शख़्स दस आदमियों पर भी निगरान हो क़ियामत के दिन उसे इस त़रह़ लाया जाएगा कि उस का हाथ उस की गरदन से बंधा हुवा होगा। अब या तो उस का अ़द्ल उसे छुड़ाएगा या उस का ज़ुल्म उसे अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा।[2]

﴾3﴿.... इन्साफ़ करने वाले क़ाज़ी पर क़ियामत के दिन एक साअ़त ऐसी आएगी कि वोह तमन्ना करेगा कि काश ! वोह आदमियों के दरमियान एक खजूर के बारे में भी फ़ैसला न करता।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज अगर हमें किसी ओ़हदे की तक़्सीम कारी की ज़िम्मेदारी दी जाए तो शायद इस का

---

[1]......صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعي رعية فلم ينصح، الحديث: ۷۱۵۱، ج۴، ص۴۵۶

[2]......السنن الکبریٰ للبیھقی، کتاب ادب القاضی، باب کراھیۃ الامارۃ، الحدیث: ۲۰۲۱۵، ج۱۰، ص۱۶۴

[3]......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدۃ عائشۃ، الحدیث: ۲۴۵۱۸، ج۹، ص۳۵۱

www.dawateislami.net

सब से बड़ा ह़क़दार हम अपनी ही ज़ात को समझें लेकिन येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ'ला ज़र्फ़ी थी कि ख़िलाफ़त की इस अहम ज़िम्मेदारी को अपनी ज़ात के लिये मुन्तख़ब नहीं फ़रमाया बल्कि ब त़रीक़े अह्सन दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ मुन्तक़िल कर दिया, इस की सब से अहम वज्ह येह थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिली त़ौर पर ओ़ह्दए ख़िलाफ़त को पसन्द नहीं फ़रमाते थे। चुनान्चे,

ओ़ह्दए ख़िलाफ़त से बेज़ारी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब नक्सीर का आ़रिज़ा लाह़िक़ हुवा और शिद्दत इख़्तियार कर गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने कातिब ह़ज़रते ह़मरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर फ़रमाया : **"मेरे बा'द मस्नदे ख़िलाफ़त के लिये अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ का नाम लिखो।"** ह़ज़रते ह़मरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस हुक्म पर अ़मल करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गए और उन्हें कहा कि **"मेरे पास आप के लिये एक ख़ुश ख़बरी है।"** ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **"बताओ क्या है?"** ह़ज़रते ह़मरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें बताया कि "ख़िलाफ़त के लिये अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बा'द आप का नाम मुन्तख़ब फ़रमाया है।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर ओ़ह्दए ख़िलाफ़त से बेज़ारी के सबब एक दम बे क़रार हो गए और मस्जिदे न–बवी में रौज़ए अन्वर और मिम्बर मुबारक के दरमियान खड़े हो गए और **बारगाहे रब्बुल आ़–लमीन** में यूं दुआ़ की : **"ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर वाक़ेई अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बा'द मुझे ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया है तो मुझे इन से पहले ही मौत अ़ता फ़रमा ।"** चुनान्चे आप की येह दुआ़ क़बूल हुई और छ[6] माह के अन्दर अन्दर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले ही आप का इन्तिक़ाल हो गया। एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िलाफ़त से बेज़ारी का इज़्हार करते हुए यूं इर्शाद फ़रमाया : **"तुम धारीदार ख़न्जर मेरे गले पर रख कर तेज़ी से चला दो, मुझे येह बात अमीरुल मुअमिनीन बनने से ज़ियादा पसन्द है ।"[1]**

अगर येह ज़िम्मेदारी सोंप दी गई हो तो......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अव्वलन तो ऐसी ज़िम्मेदारी से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है लेकिन किसी को येह अहम ज़िम्मेदारी सोंप दी गई हो तो उसे परेशान भी नहीं होना चाहिये बल्कि इस मुआ़–मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद त़लब करे और रिज़ाए इलाही

[1]......تاریخ مدینہ دمشق، عبدالرحمن بن عوف، ج۳۵، ص ۲۹۲، ۲۹۱

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ पर राज़ी रहे, नीज़ अपने अन्दर **एह़सासे ज़िम्मेदारी** पैदा करते हुए अ़दलो इन्साफ़ से काम ले, नीज़ **अह़कामे शरइ़य्या** के मुत़ाबिक़ इस ज़िम्मेदारी को अदा करे। चुनान्चे ऐसे शख़्स के लिये तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा कीजिये :

﴿1﴾.....इन्साफ़ करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे येह वोह लोग हैं जो अपने फ़ैसलों, घर वालों और जिन जिन के निगरान बनते हैं उन के बारे में अ़द्ल से काम लेते हैं।[1]

﴿2﴾.....ह़ाकिम ने फ़ैसला करने में कोशिश की और ठीक फ़ैसला किया उस के लिये दो सवाब और अगर कोशिश कर के (ग़ौरो ख़ौज़ कर के) फ़ैसला किया और ग़-लत़ी हो गई उस को एक सवाब।[2]

﴿3﴾.....**ऐ अल्लाह !** जो शख़्स इस उम्मत के किसी मुआ़-मले का निगरान है पस वोह उन से नरमी बरते तो तू भी उस से नरमी फ़रमा और उन पर सख़्ती करे तो तू भी उस पर सख़्ती फ़रमा।[3]

सह़ाबए किराम के नज़्दीक मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ल्मी जलालत और दीगर औसाफ़ की बिना पर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर

[1] .....سنن النسائی، کتاب آداب القضاۃ، باب فضل الحاکم، الحدیث: ۵۳۸۹، ص ۸۵۱

[2] .....صحیح البخاری، کتاب الاعتصام، باب اجر الحاکم اذا اجتھد فاصاب او اخطأ، الحدیث: ۷۳۵۲، ج ۴، ص ۵۲۲

[3] .....صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضیلۃ الامام.....الخ، الحدیث: ۱۸۲۸، ص ۱۰۱۶

www.dawateislami.net

जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम के नज़्दीक आप का एक नुमायां मक़ाम था जिस का अन्दाज़ा यूं भी बख़ूबी किया जा सकता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाते हुए अचानक अबू **लू लू फ़ीरोज़ मजूसी** ने ख़न्जर से ह़म्ला कर के शदीद ज़ख़्मी कर दिया और भागते हुए कमो बेश दीगर तेरह नमाज़ियों को भी ज़ख़्मी कर दिया जिन में से बा'द में सात आदमी शहीद हो गए। एक बुज़ुर्ग नमाज़ी ने अबू लू लू मजूसी पर अपनी चादर फेंक कर पकड़ लिया तो उस ने ख़ुदकुशी कर ली। तो उस मौक़अ़ पर भी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर नमाज़ में अपना ख़लीफ़ा बना दिया जिन्हों ने मुसल्ले पर जा कर मुख़्तसर नमाज़ पढ़ाई।[1]

दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल 31 या 32 सिने हिजरी में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा, इन्तिक़ाल के वक़्त आप की उ़म्र 72 या 75 साल थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई।[2]

---

[1] .....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث ۳۷۰۰، ج ۲، ص ۵۳۱

[2] .....المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۶۲، ج ۱، ص ۱۲۸ معرفة الصحابة، معرفة عبد الرحمن بن عوف، ج ۳، ص ۲۶۰

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे पुर अन्वार

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल के वक़्त उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप के पास येह पैग़ाम भेजा कि अगर आप चाहें तो आप के दोस्तों या'नी प्यारे आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में जगह दे दी जाए ? (याद रहे कि इन दोनों मुक़द्दस हस्तियों के मज़ाराते मुबा-रका सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में ही बनाए गए थे) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "मैं आप पर आप के घर को तंग नहीं करना चाहता, और मैं ने ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़ह्द लिया है कि वोह जहां भी वफ़ात पाएंगे अपने दोस्त या'नी मेरे पहलू में दफ़्न किये जाएं।"

येही वज्ह है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के मज़ारात जन्नतुल बक़ीअ़ में शहज़ादए रसूल ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारे मुबारक के साथ हैं।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को इन **मुक़द्दस मज़ारात** की ह़ाज़िरी नसीब फ़रमाए। आमीन

वक़्ते वफ़ात सह़ाबए किराम के तअस्सुरात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल उ़मूमन जब

[1]……الریاض النضرہ، ج ۲، ص ۳۱۴

www.dawateislami.net

किसी मालदार शख़्स का इन्तिक़ाल होता है तो इस के बा'द उसे अच्छे लफ़्ज़ों से याद नहीं किया जाता, लेकिन क़ुरबान जाइये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते मुबा-रका पर कि मालदार होने के बा वुजूद आप ने अपनी पूरी ज़िन्दगी नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और आप के अहले बैत की ख़िदमत में गुज़ार दी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल के वक़्त सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अपने मुबारक कलिमात से वोह ख़िराजे तह़्सीन पेश किया जिसे रहती दुन्या तक याद रखा जाएगा चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के जनाज़े के मौक़अ़ पर कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया : **''ऐ अ़ब्दुर्रह़मान.....! तुम्हें मुबारक हो कि दारुल अ़मल में जो तुम ने नेकियों का गन्जीना कमाया उसे बिग़ैर कमी किये सह़ीह़ो सालिम दारुल जज़ा मुन्तक़िल करने में काम्याब हो गए।** (या'नी ह़ुकूमत व ख़िलाफ़त से तुम कोसों दूर रहे जो नेकियों के ख़ज़ाने में कमी का सबब बन सकती थी)[1] और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم यूं फ़रमाने लगे : **''ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! जाओ, बेशक दुन्या की**

[1] .....المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر مناقب عبدالرحمن بن عوف، الحدیث: ۵۳۸۹، ج۴، ص۳۶۲

www.dawateislami.net

तमाम भलाइयां तुम पा चुके और इस की बुराइयों से तुम मह़फ़ूज़ रहे।''[1]

पैकरे शर्मो ह़या अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़
आ़शिक़े शाहे हुदा अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़
शुमार उन सह़ाबा में हुवा जिन्हें दुन्या में
टिकट हुवा जन्नत का अ़त़ा अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़
सब सह़ाबा से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَ اللہ अपना बेड़ा पार है

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें बारगाहे रिसालत के इस अ़ज़ीमुश्शान सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा से अ़त़ा होने वाले म-दनी फूलों को अपने दिल के म-दनी गुलदस्ते में सजाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, और इन पर अ़मल कर के पूरी दुन्या में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा इस म-दनी मक़्सद कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ'' के तह़त म-दनी कामों की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

[1]......المعجم الکبیر، سن عبد الرحمن بن عوف ووفاتہ، الحدیث: ۲۶۳، ج ۱، ص ۱۲۸

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

1	**القرآن الکریم:** کلام باری تعالٰی، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
2	**ترجمۂ قرآن کنز الایمان:** اعلٰی حضرت امام احمد رضا ۱۳۴۰ ھ، مکتبۃ المدینہ
3	**تفسیر خازن:** علاء الدین علی بن محمد بغدادی متوفی ۷۴۱ھ، آکوڑہ خٹک نوشہرہ
4	**صحیح البخاری:** امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ ھ، دار الکتب العلمیۃ
5	**صحیح مسلم:** امام مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ھ، دار ابن حزم، بیروت
6	**سنن ابن ماجہ:** امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۷۳ھ، دار المعرفۃ، بیروت
7	**سنن الترمذی:** امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی ۲۷۹ھ، دار الفکر بیروت
8	**سنن النسائی:** امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی متوفی ۳۰۳ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت
9	**سنن ابی داود:** امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت
10	**المعجم الکبیر:** الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ، دار احیاء التراث العربی
11	**المعجم الاوسط:** الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ، دار احیاء التراث العربی
12	**المسند:** امام احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ، دار الفکر، بیروت
13	**المستدرک:** امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری ۴۰۵ھ، دار المعرفۃ، بیروت
14	**صحیح ابن حبان:** علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی، متوفی ۷۳۹ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت
15	**مسند ابی یعلی:** شیخ الاسلام ابو یعلٰی احمد بن علی بن مثنی موصلی متوفی ۳۰۷ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت

www.dawateislami.net

16	**مجمع الزوائد:** حافظ نورالدين علی بن ابی بکر ہیتمی متوفی ۸۰۷ھ، دارالفکر، بیروت
17	**المصنف:** حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ ۲۳۵ھ، دارالفکر بیروت
18	**المصنف:** امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی متوفی ۲۱۱ھ، دارالکتب العلمیہ، بیروت
19	**کنز العمال:** علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت
20	**دلائل النبوة:** امام احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ، دارالکتب العلمیۃ، بیروت
21	**شعب الایمان:** امام احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ، دارالکتب العلمیۃ، بیروت
22	**السنن الکبری:** امام احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ، دارالکتب العلمیۃ، بیروت
23	**کشف الخفاء:** شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی متوفی ۱۱۶۲ھ، دارالکتب العلمیہ، بیروت
24	**الفردوس بمأ ثور الخطاب:** حافظ ابو شجاع شیرویہ بن شہرداربن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ، دارالفکر، بیروت
25	**حلیۃ الاولیاء:** حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی متوفی ۴۳۰ھ، دارالکتب العلمیہ، بیروت
26	**صحیح مسلم بشرح النووی:** امام ابوزکریا محي الدین بن شرف النووی ۶۷۶ھ، دارالفکر بیروت
27	**فیض القدیر:** علامہ محمد عبد الرءُوف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ، دارالکتب العلمیۃ، بیروت
28	**اَشعّۃ اللمعات:** شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ، کوئٹہ
29	**کشف الالتباس فی استحباب اللباس:** شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ، کراچی

www.dawateislami.net

30	**مدارج النبوة:** شیخ عبد الحق محدث دهلوی متوفی ۱۰۵۳ھ، مرکز اهلسنت برکات رضا هند
31	**کتاب المغازی:** محمد بن عمر بن واقدی، ۲۰۷ھ، مؤسسة الاعلمی للمطبوعات
32	**الطبقات الکبری:** الامام محمد بن سعد البصری ۲۳۰ھ، دار الکتب العلمیة
33	**معرفة الصحابة:** امام ابو نعیم احمد بن عبد الله ۴۳۰ھ، دار الکتب العلمیة
34	**الاستیعاب فی معرفة الاصحاب:** امام ابو عمرو یوسف بن عبد الله بن محمد بن عبد البر ۴۶۳ھ، دار الکتب العلمیة
35	**اسد الغابة:** ابو الحسن علي بن محمد بن الاثیر الجزری متوفی ۶۳۰ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت
36	**الاصابة فی تمییز الصحابة:** الحافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ، دار الکتب العلمیة
37	**الریاض النضرة:** امام احمد بن عبد الله المحب الطبری ۶۹۴ھ، دار الکتب العلمیة
38	**تاریخ مدینه دمشق:** الحافظ ابو القاسم علی بن حسن الشافعی، المعروف بابن عساکر ۵۷۱ھ، دار الفکر
39	**شواهد النبوة:** مولانا عبد الرحمن جامی متوفی ۹۹۸ھ، استنبول ترکی
40	**سیر اعلام النبلاء:** شمس الدین محمد بن احمد ذهبی متوفی ۷۴۸ھ، دار الفکر، بیروت
41	**الشفاء:** القاضی ابو الفضل عیاض مالکی متوفی ۵۴۴ھ، مرکز اهلسنت برکات رضا هند
42	**اِحیاءُ الْعُلوم:** امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ، دار صادر، بیروت
43	**قُوْتُ الْقُلوب:** شیخ ابو طالب مکی متوفی ۳۸۶ھ، دار الکتب العلمیة
44	**کَشْفُ المحجوب:** علی بن عثمان هجویری المتوفی ۵۰۰ھ، لاهور

www.dawateislami.net

45	**تنبیہ المغترین:** ابوالمواہب عبدالوہاب الشعرانی المتوفی ۹۷۳، دارالمعرفۃ بیروت
46	**اصلاحِ اعمال:** عارف باللہ سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی متوفی ۱۱۴۱ھ، مکتبۃ المدینہ
47	**جہنم میں لے جانے والے اعمال:** امام احمد بن حجر المکی الہیتمی الشافعی المتوفی ۹۷۴ھ، مکتبۃ المدینہ
48	**الفتاوی الھندیۃ:** علامہ ہمام مولانا شیخ نظام متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الھند، دارالفکر بیروت
49	**الفتاوی البزازیۃ مع الفتاوی الھندیۃ:** حافظ الدین محمد بن محمد بن المعروف بابن بزار متوفی ۸۲۷ھ، دارالفکر بیروت
50	**فتاویٰ رضویہ:** اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ، رضا فاؤنڈیشن، لاہور
51	**بہارِ شریعت:** مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ، مکتبۃ المدینہ
52	**فتاویٰ امجدیہ:** مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ، مکتبہ رضویہ، کراچی
53	**مرأۃ المناجیح:** حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ، ضیاء القرآن پبلیکیشنز
54	**اسلامی زندگی:** حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ، مکتبۃ المدینہ
55	**خزانے کے انبار:** امیر اہلسنت مولانا محمد الیاس عطار قادری، مکتبۃ المدینہ
56	**عقیقے کے بارے میں سوال جواب:** امیر اہلسنت مولانا محمد الیاس عطار قادری، مکتبۃ المدینہ
57	**فیضانِ سنت:** امیر اہلسنت مولانا محمد الیاس عطار قادری، مکتبۃ المدینہ

www.dawateislami.net

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत की मत़्बूआ़ और अ़न्क़रीब आने वाली कुतुबो रसाइल

अ़न्क़रीब आने वाले रसाइल / कुतुब

नम्बर शुमार	किताब/रिसाला
1	ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
2	ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
3	ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
4	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
5	ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
6	सीरते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहो़ल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **"** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net